सर्वमंगलकारी

रुद्राभिषेक

धर्मयात्रा महासंघ

ॐ नमः शिवाय

शुक्ल यजुर्वेदीय मन्त्रों द्वारा

सर्वमंगलकारी रूद्राभिषेक

(शिव पूजन एंव रूद्राभिषेक विधि)

संकलनकर्ता - **गिरिप्रसाद**
एम० ए० (सस्कृत)

शारदा पुस्तकालय
(संजीवनी ... ह कोड)
क्रमांक ... 162

प्राप्तिस्थानः

धर्मयात्रा महासंघ

5070/1 सन्त नगर, देश बन्धु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली – 110 005
दूरभाष – 5713934

सर्वभूत हितेरताः

"पदमश्री" वीतराग श्री १००८ स्वामी कल्याण देव जी महाराज

पो० शुकताल, जिला मुजफ्फ़र नगर, उत्तर प्रदेश – २५१३१६

द्वारा

आशीर्वचन

मुझे जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि "धर्मयात्रा" महासंघ नई दिल्ली की ओर से पुरा महादेव (मेरठ) में एक रूद्राभिषेक का आयोजन किया गया है। आज के भीषण भयंकर युग में भारतीय धर्म प्रचार का इस प्रकार का आयोजन बहुत महत्त्वपूर्ण है। सभी धर्म प्रेमियों के लिये यह महत्त्वपूर्ण प्रेरराा होगी और जनता में रूद्राभिषेक की प्रेरराा से सुख शांति स्थापित होगी।

धर्मयात्रा महासंघ इस शुभावसर पर जो पुस्तक प्रकाशित कर रहा है, उसमें शिव पूजा, शिवलिंग पूजा, शिव पूजन विधि तथा शिव महात्म्य आदि पर जो लेख लिखे गये हैं, उसे पढ़कर जनता में धर्म के प्रति आस्था उत्पन्न होगी और समाज में धर्म मार्ग पर चलकर सुख शांति का वातावरण बनेगा।

मेरी ओर से धर्मयात्रा महासंघ तथा सभी धर्म प्रेमियों व कर्मचारियों को इस शुभ कार्य करने के लिये आशीर्वाद।

(स्वामी कल्याणदेव)

शारदा पुस्तकालय
(संजीवनी शारदा केन्द्र)
क्रमांक 162

दो शब्द

भारत की आत्मा तीर्थों में वास करती है।
तीर्थों का विकास भारत का विकास।।

इस उद्देश्य को लेकर धर्मयात्रा महासंघ तीर्थों के विकास में प्रयासरत है। प्रत्येक भारतवासी की रुचि तीर्थों के प्रति जाग्रत करने, तीर्थों का इतिहास सकंलित करने एंव उन्हें स्वच्छ, सुव्यवस्थित तथा पावन बनाए रखने के लिये 'आराध्यदेव हेतु श्रद्धासुमन' नामक एक पत्रक भी इस संस्था द्वारा धर्मप्रेमियों से भरवाया गया है। पतित पावनी गंगा हमारी माँ है इसको पावन निर्मल बनाए रखना हमारा परमधर्म है। अतः यह संस्था गंगा दशहरा के अवसर पंर गंगा किनारे अनेक स्थानों पर गंगा महोत्सव मनाकर 'गंगा प्रदूषण मुक्त रहे' भारतवासियों में इसके प्रति जागृति लाने का प्रयत्न कर रही हैं।

हमारे तीर्थ आस्था के प्रतीक हैं, अर्चनीय हैं, वन्दनीय हैं, केवल भ्रमण स्थल नही हैं। इस उद्देश्य को लेकर यह संस्था भारत सरकार से एक तीर्थाटन मन्त्रालय बनवाने का प्रयत्न कर रही है। दिल्ली सरकार ने इस ओर कदम बढ़ाते हुए एक 'तीर्थ यात्रा विकास समिति' गठित की है। जिसके द्वारा इस वर्ष सभी कैलास मानसरोवर यात्रियों का अभिनन्दन किया जा रहा है। नीलधारा (हरिद्वार) से गंगाजल लाकर भोले नाथ, भगवान शिव का अभिषेक करने वाले ' काँवरियों ' को उचित सम्मान एंव सुविधाएं दी जा रही

हैं। इसी समिति के आर्थिक सहयोग से धर्मयात्रा महासंघ की प्रथम पुस्तक 'हमारा सांस्कृतिक स्वर्ग कैलास मानसरोवर' भी प्रकाशित हुई हैं।

पिछले वर्ष घटित अमरनाथ त्रासदी के पश्चात् धर्मयात्रा महासंघ ने पंजाब हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति श्री धर्मवीर सहगल के नेतृत्व में एक जाँच समिति गठित की थी। जिसके सदस्यों ने जम्मू काश्मीर सरकार से मिलकर अमरनाथ यात्रा में आने वाली असुविधाओं को दूर करवाने का प्रयत्न किया है।

अगले वर्ष इस शताब्दी के महाकुम्भ का योग हरिद्वार में बन रहा है, वह निर्विघ्न सम्पन्न हो, इस कामना हेतु एक भव्य रूद्राभिषेक का आयोजन पुरा महादेव मन्दिर (मेरठ) में किया जा रहा है। इस अवसर पर धर्म प्रेमियों को आशुतोष भगवान शिव के पूजन एंव रूद्राभिषेक विधि का ज्ञान मिले श्री गिरिप्रसाद गुप्ता द्वारा संकलित **'सर्वमंगलकारी रूद्राभिषेक'** नामक पुस्तक इस संस्था द्वारा प्रकाशित की जा रही हैं। सभी पाठकों से मेरा कहना है कि आप तीर्थों के विकास में रुचि लें तथा अपने देश की प्रतिष्ठा को सम्पूर्ण विश्व में स्थापित करें।

(मांगे राम गर्ग)

राष्ट्रीय अध्यक्ष – धर्मयात्रा महासंघ

नम्र निवेदन

सर्वप्रथम मैं आशुतोष भगवान शिव के चरणों में नतमस्तक हूं जिनकी कृपा से वयोवृद्ध सन्त शिरोमणि स्वामी कल्याणदेव जी के सान्निध्य में परशुरामेश्वर पुरा महादेव मन्दिर (मेरठ) में यह भव्य रूद्राभिषेक सम्पन्न होने जा रहा हैं। तत्पश्चात मैं धर्मयात्रा महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मांगेराम गर्ग का कृतज्ञ हूं जिन्होंने इस भव्य रूद्राभिषेक हेतु एक निर्देशक के रूप में यह ' सर्वमंगलकारी रूद्राभिषेक ' पुस्तिका लिखने का उत्तरदायित्व मुझे सौंपा। मैं राष्ट्रीय प्रचारमन्त्री श्री हितेन्द्र संगल का भी आभारी हूँ जिन्होनें मुझे यह पुस्तिका छपवाने की अनुमति दी। मैं 'तिरपाल उद्योग' के स्वामी श्री प्रमोद अग्रवाल 'कासमधु वाले' श्री घनश्याम अग्रवाल तथा अन्य जिसने भी इस पुतिस्का हेतु आर्थिक प्रबन्ध किया, उन सब का ऋणी हूँ। मैं प्रकाशन एवं मुद्रण कार्य में सहयोग देने वालों का भी धन्यवाद करता हूँ कि इतनी शीघ्र एंव सुन्दर रूप में यह पुस्तिका प्रकाशित हो सकी।

एक अज्ञानी, अल्प बुद्धि व्यक्ति को अगर श्री रघुनन्दन प्रसाद शर्मा, जिन्होनें धर्मयात्रा महासंघ की पहली पुस्तक 'हमारा सांस्कृतिक स्वर्ग कैलास मानसरोवर लिखी है, शिव पुराण मर्मज्ञ श्री ओमप्रकाश शर्मा (पिलखुवा वाले), व्याकरराा आचार्य पं० रामशरराा गोस्वामी, पं० विजयकान्त झा एंव कर्मकाण्ड में पारगंत वेदाचार्य पं० गिरीशचन्द पांडेय, अपनी विद्वता का मार्गदर्शन नही देते तो आज इस पुस्तिका का यह रूप सम्भव

नहीं था अतः मैं इन सभी विद्वतजनों का सहृदय आभार प्रकट करता हूँ।

प्रस्तुत पुस्तक एक संकलन मात्र है जिसमें यजुर्वेद, शिव महापुराण, श्रीमद्भागवतपुराण, श्रीमद्बाल्मीकीय रामायरा, श्रीमद्भागवद गीता, रामचरितमानस तथा गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित .शिवांक, तीर्थांक एंव चिन्तामणि आदि धार्मिक ग्रन्थों से संदर्भ लिये गये हैं। फिर भी अगर कोई प्रमाण सटीक न बैठा हो, त्रुटि रह गई हो तो विद्वान महानुभाव मुझे क्षमा करेंगे तथा सकारात्मक सुझाव भेजकर अनुगृहीत करेंगे।

'सर्वमंगलकारी रूद्राभिषेक' नामक इस पुस्तिका में आशुतोष भगवान शिव को निराकार साकार दोनों 'रूपों में दर्शाया गया है साथ ही यह भी स्पष्ट किया गया है कि सांसारिक प्राणि के लिये साकार पूजा ही भगवद् प्राप्ति का एक मात्र साधन है। साधारण एंव अज्ञानी लोगों में शिवलिंग के प्रति फैली हुई अज्ञानता को भी दूर करने का प्रयत्न किया गया है। शिवलिंग भगवान शिव का ही साक्षात् स्वरुप है, यह स्थूल रूप में दिखाई देते हुए भी सूक्ष्म रूप है, इस तथ्य को प्रमाणों द्वारा स्पष्ट किया गया है। भगवान शिव का रूद्राभिषेक अगर विधि विधान तथा श्रद्धा, विश्वास के साथ किया जाये तो यह सर्वमंगलकारी है, ऐसा मेरा पक्का विश्वास है, अतः इस पुस्तिका के माध्यम से शिवभक्तों को यह अनुष्ठान करने के लिये प्रेरित किया गया है।

धर्मयात्रा महासंघ का एक उद्देश्य पावन तीर्थ स्थलों का इतिहास संकलन करना भी है। अतः इस पुस्तक में परशुरामेश्वर

महादेव समिति द्वारा प्रकाशित 'परशुरामेश्वरदर्पण' पुस्तिका के आधार पर इस सिद्ध पीठ का संक्षिप्त इतिहास दिया गया हैं। भगवान शिव के स्तवन, अर्चन, वन्दन एंव लाभकारी मन्त्रों के अतिरिक्त हमारे मोक्ष प्राप्ति के द्वार द्वादश ज्योतिलिंग आदि तीर्थों का भी अतिसंक्षिप्त परिचय कराया गया है। धर्म प्रेमी पाठकों से मेरा नम्र निवेदन है इस पुस्तिका से यथा सम्भव धर्म लाभ उठाने का प्रयत्न करें, अशुद्धियों के लिये क्षमा करें। आलोचकों से मेरी विनती है कि वे सकारात्मक आलोचना धर्मयात्रा महासंघ के केन्द्रीय कार्यालय में भेजने की कृपा करें ताकि इस पुस्तिका के दूसरे संस्करण में, उनको ध्यान में रखते हुए कमियों को दूर किया जा सके। अन्त में, मैं पुनः सभी धर्म प्रेमी पाठकों का सहृदय धन्यवाद करता हूँ।

श्रावण, कृष्ण–द्वितीया, सम्वत् २०५४
सोमवार, 21 जुलाई, 1997

गिरिप्रसाद
एम० ए० (संस्कृत)

विविध पुष्प

क्रमांक	पुष्प	पृष्ठ-संख्या
1.	आशुतोष भगवान शिव	9
2.	शिवलिंग – रहस्य	18
3.	सर्वमंगलकारी रूद्राभिषेक	26
4.	शिव पूजन एवं रूद्राभिषेक विधि	33
5.	शिव स्तवन एवं रूद्राष्टकम्	52
6.	विशेष लाभकारी मन्त्र	57
7.	ध्यान रखने योग्य बातें एवं पूजंन सामग्री	60
8.	द्वादश ज्योतिर्लिंग	62
9.	परशुरामेश्वर का संक्षिप्त इतिहास	68
10.	तीर्थ मोक्ष के द्वार हैं	71
11.	धर्मयात्रा महासंघ – परिचय	76

आशुतोष भगवान शिव

ब्रह्म वैवर्त पुराण के ब्रह्म खण्ड में भगवान भी कृष्णा कहते हैं :-

जो "शिव" शब्द का उच्चारण करके प्राणों का त्याग करता है वह कोटि जन्म के पापों से छूट कर मुक्ति को प्राप्त हो जाता है। "शिव" शब्द कल्याणवाची है और "कल्याण" शब्द मुक्तिवाचक हैं, वह मुक्ति भगवान शंकर से ही प्राप्त होती है, इसीलिये वे "शिव" कहलाते हैं। "शि" का अर्थ है पापों का नाश करने वाला और "व" कहते हैं मुक्ति देने वाले को। भगवान शंकर में ये दोनों गुण हैं, इसीलिए वे "शिव" कहलाते हैं। "शिव" यह मंगलमय नाम जिसकी वाणी में बहता हैं उसके करोड़ जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं। भगवान् शिव विश्व भर के मनुष्यों का सदा "शं" शान्ति प्रदान करते हैं। इसी से वे "शंकर" कहलाते हैं। ब्रह्मादि जी देवता तथा वेद का उपदेश करने वाले जो कोई भी संसार में महान् कहलाते हैं उन सबके देव अर्थात् उपास्य होने से वे "महादेव" कहे जाते हैं।

श्री महाभारत के अनुशासन पर्व में वेदव्यास जी लिखते हैं कि :-

नास्ति शर्वसमो देवो नास्ति शर्वसमो गतिः।
नास्ति शर्वसमो दाने नास्ति शर्वसमो रणे।।

(अनुशासनपर्व १५/११)

"शिव के समान देव नहीं हैं, शिव के समान गति नहीं हैं, शिव के समान दाता नहीं हैं, शिव के समान योद्धा (वीर) नहीं हैं।"

शिव पुराण में भी भगवान् शिव स्वयं कहते हैं :-

अहं शिवः शिवश्चायं त्वं चापि शिव एव हि।
सर्व शिवमयं ब्रह्म शिवात्परं न किचंन।।

"मैं शिव, यह शिव, तुम शिव, सब कुछ शिवमय है। शिव के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।"

भगवान् शिव के पंच वक्त्र (मुख) :-

"शिव" शब्द नित्य, विज्ञानान्दघन परमात्मा का वाचक है, यह उच्चारण में बहुत ही सरल, अत्यन्त मधुर और स्वाभाविक शान्तिप्रद हैं। इस विज्ञानान्दघन परमात्मा के वेदों में दो स्वरुप माने गये हैं।

प्रकृति रहित ब्रह्म को निर्गुण ब्रह्म कहा गया हैं। तथा जिस अंश में प्रकृति अथवा त्रिर्गुणमयी माया है। उस प्रकृति सहित ब्रह्म के अंश को सगुण ब्रह्म कहते हैं। सगुण ब्रह्म के भी दो भेद माने गये हैं। एक निराकार और दूसरा साकार।

निर्गुण निराकार रुप :- मन बुद्धि से परे सर्वव्यापी, अकथनीय, नित्य, अचल, निराकार, निर्गुण, अविनाशी, सचिदानन्दघन, ब्रह्म को ही भगवान् शिव के उपासक 'सदाशिव' के नाम से पुकारते हैं।

सगुण निराकार रुप :- श्रीमद्भागवद् गीता के आठवें अध्याय में सगुण निराकार का स्वरुप बतलाया गया हैं :–

कवि पुराणमनुशासिता रमराोरणीयां समनुस्मरेद्यः।
सर्वस्य धातारमचिन्त्य रुपमादित्यवर्ण तमसः परस्तात्।।

सर्वज्ञ, अनादि, सबकेनियन्ता, सूक्ष्म से भी अति सूक्ष्म, सबको धारण पोषण करने वाला, अचिन्त्यस्वरुप, सूर्य के सदृश नित्य चेतन प्रकाश रुप और अविद्यासे अति परे शुद्ध सच्चिदानन्दघन परमेश्वर ही सगुण निराकार ब्रह्म हैं। इस सगुण निराकार ब्रह्म को ही महेश्वर परमेश्वर आदि नामों से पुकारा जाता हैं।

सगुण साकार रुप :- सगुण साकार **ब्रह्म** के तीन रुप हैं :–

1. सृष्टि के उत्पन्न करने वाले को **ब्रह्मा** नाम से पुकारते हैं।
2. सृष्टि के पालन करने वाले का **विष्णु** नाम से पुकारा जाता हैं।
3. सृष्टि के संहार करने वाले का नाम **रुद्र** अथवा **महेश** हैं।

श्वेताश्वतर उपनिषद् में भी लिखा हैं :-

मायां तु प्रकृति विद्यान्मायिनं तु महेश्वरम्।
तस्यावयवीभूतैस्तु व्याप्तं सर्वमिदं जगत्।।

माया प्रकृति है और महेश्वर प्रकृति (माया) के अधिष्ठाता। माया के द्वारा उन्हीं के अवयव भूत जीवों से समस्त संसार परिव्याप्त हो रहा हैं।

'शिव पुराण में ब्रह्मा जी कहते हैं :-

अहं विष्णुश्च रुद्रश्च गुणस्त्रय उदाहृताः।
स्वयं सदा निर्गुणश्च पर ब्रह्मा व्ययश्शिवः।।

(शिव० रुद्र० १६/३६)

मैं (ब्रह्मा) विष्णु और रुद्र ये तीनों सगुण हैं पर ब्रह्म अविनाशी सदाशिव स्वयं निर्गुण हैं।

शिवपुराण में ही ब्रह्मा जी पुनः कहते हैं :-

परं ब्रह्म शिवः प्रोक्तस्तस्य रुपास्त्रय सुराः।
अहं विष्णुश्च, रुद्रश्च गुण भेदानुरुपतः।।

(शिव० रुद्र० १६/४८)

शिव जी साक्षात् परब्रह्म है, गुणों के भेद से उन्हीं के ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीन रुप हैं। इस प्रकार **निर्गुण निराकार**, सदाशिव **सगुण निराकार** महेश्वर **तथा सगुण साकार** रुप में ब्रह्मा, विष्णु, महेश ये पांचों शिव के ही रुप हैं। एवं यहीं सदाशिव का पंच वकत्र (मुख) कहलाता है।

'श्रीरामचरितमानस में भी तुलसीदास जी लिखतें हैं :-

सगुनहि अगुनहि नहि कछु भेदा। गावहि मुनि पुरान बुध वेदा।।
अगुन अरुप अलख अज होई। भगत प्रेम बस सगुन सो होई।।
जो गुण रहित सगुन सोई कैसे। जल हिम उपल बिलग नहीं जैसे।।

यहीं बात श्रीमहाभारत् के विष्णु पर्व में श्री मार्कण्डेय जी भी कहते हैं :-

यो विष्णुः स तु वै रुद्रो यो रुद्रः सपितामहः।
एकः मूर्तिस्त्रयोदेवा रुद्र विष्णुपितामहा।।

(श्री महा विष्णु १२५/३१)

जो विष्णु हैं वे ही रुद्र हैं, और जो रुद्र हैं वे ही ब्रह्मा हैं। इनका मूल स्वरुप तो एक ही हैं। परन्तु वे कार्य भेद से रुद्र, विष्णु और ब्रह्मा तीन देवता कहलाते हैं।

सगुण साकार रुप की उपासना :- ईश्वर प्राप्ति के पूर्व ईश्वर व यथार्थ स्वरुप किसी के भी चिंतन में नहीं आ सकता। अत परमात्मा की प्राप्ति के पूर्व काल में परमात्मा का यथार्थ रुप न जाने के कारण भक्त धार्मिक ग्रन्थों में पढ़कर, अपने पूर्वजों स सुनकर, मन्दिरो में भगवान के विग्रह (मूर्ति) के दर्शन करक भगवान के किसी एक साकार रुप का उपासक हो जाता है तथा वह उसी रुप को सर्वोपरि, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी, सम्पूर्ण गुणाधार परमात्मा मानने लगता है।

वास्तव में तो केवल निर्गुण–निराकार ब्रह्म की उपासना हो ही नहीं सकती। क्योंकि जो उपासना के योग्य लक्ष्य बनाया जाता है, वह किसी लक्षण या गुण के आधार के बिना नहीं हो सकता। ध्यान करने के योग्य ध्येय–तत्व चाहे कितना भी सूक्ष्मतम क्यों न बनाया जाये, वास्तव में निर्गुण, निराकार ब्रह्म का स्वरुप तो वस्तुतः उससे भी अत्यन्त विलक्षण है किन्तु जब तक परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती तब तक उसकी प्राप्ति के लिए कुछ–न–कुछ लक्ष्य बनाकर ही उपासना करनी पड़ती है। साकार का अवलम्बन करके ही निर्गुण निराकार ब्रह्म की भावना की जा सकती है। साकार के बिना निराकार में स्थिति लाभ नहीं हो सकता। सबकुछ साकार ही दृष्टिगोचर होता है, अतः निरन्तर अभ्यास के द्वारा ही निराकार की उपलब्धि हो सकती है। भगवान चिन्मय, अद्वितीय, कलारहित तथा रुपरहित होते हुए भी उपासक को कृतार्थ करने के लिए उसके ध्येय रुप में उपस्थित होते हैं।

"ब्रह्मणो रुप कल्पना-कर्त्तरिषष्ठि"। इसी को स्पष्ट करते हुए अगस्त्य ऋषि कहते हैं :-

सर्वेश्वरः सर्वमयः सर्वभूतहितेरतः।
सर्वेषामुपकाराय साकारोऽभून्निरा कृतिः।।

(अग० स० तृ०)

जो सर्वेश्वर सर्वमय, सब भूतों के हित में लगे रहने वाले हैं, वही सब के उपकार के लिये निराकार होते हुए भी साकार हुए हैं। यहाँ साकार रुप मनुष्य की कल्पना नहीं है, माया ही अपनी शक्ति से रुप धारण करती हैं। बिना स्थूल मूर्ति के ध्यान की, चित्त की एकाग्रता हो ही नहीं सकती। फिर वह मूर्ति भी चिन्ताकर्षक और अभिमत होनी चाहिए।

ऋषि पातंजलि कहते है :-

"यथा अभिमत ध्यानाद्वा"

(योग सूत्र)

यही बात शिव पुराण में भी कही गयी हैं :-

"स्थित्यर्थमनसः केचित् स्थूल ध्यानं प्रकुर्वते"

(शिव० वा० स०)

साकार पूजा के लिए यदि प्रत्येक घर में एक–एक भगवान् की मूर्ति या चित्र रहे–मूर्ति या चित्र वही हो जो अपने मन को रुचता हो और नित्य नियमपूर्वक उसकी पूजा की जाये तो समय और मन दोनों का परमात्मा में लगाने का अभ्यास अनायास हो सकता है तथा साकार पूजा के द्वारा निराकार ब्रह्म की प्राप्ति भी सम्भव हो सकती।

भगवान् भक्त के वश में – यदि कोई भगवत्परायण होकर निष्काम प्रेम भाव से भगवान की भक्ति करे तो उसे साक्षात दर्शन देने के लिए भगवान निश्चित रुप से बाध्य हैं।

भगवान ने स्वयं कहा हैं कि :-

भक्त्या व्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन।
ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परंतप।।

(गीता ११/५४)

"हे अर्जुन ! अनन्य भक्ति कर के तो इस प्रकार साकार रुप से मैं प्रत्यक्ष देखने के लिये और तत्त्व से जानने के लिऐ तथा प्रवेश करने के लिए अर्थात् एकीभावसे प्राप्त होने के लिए भी शक्य हूँ।

रामचरितमानस में भी गुरु बृहस्पति इन्द्र से यहीं बात कह रहें हैं:-

अगुन अलेष अमान एक रस।
राम सगुन भय भगत प्रेम बस।।

गुणरहित, निर्लेप और सदा एक रस भगवान श्री राम, भक्त के प्रेम बस ही सगुण हुए हैं।

श्रीमद्भागवद्गीता का एक श्लोक और देखिये :-

पंत्र पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः।।

जो कोई भक्त मेरे लिए प्रेम से पत्र, पुष्प, फल, जल आदि अर्पण करता है, उस शुद्ध बुद्धि, निष्काम प्रेमी भक्त का प्रेमपूर्वक अर्पण किया हुआ वह पत्र पुष्पादि में सगुण रुप से प्रकट होकर प्रीति सहित खाता हूँ।

भगवान शिव की प्राप्ति :-

इस प्रकार भगवान् श्री कृष्ण द्वारा निर्दिष्ट पथ पर चलने से गीता के १६ वें अध्याय में वर्णित दैवी सम्पत्ति के लिए भगवान् से आत्म–निवेदन करने पर तथा १२ वें अध्याय में कहे हुए भक्त के लक्षणों से युक्त होने पर आशुतोष भगवान शिव साधक के निकट आविर्भूत होते हैं। ऐसा करने से ही, शिव का रुप है या नहीं, पुराण सत्य हैं या नहीं, इत्यादि नाना प्रकार के सन्देह दूर हो जाते हैं। केवल पुस्तक पढ़ने से पुस्तकी विद्या के आगे कोई नहीं जा सकता। सद्गुरु के शरणागत होकर अपने चरित्र को सुधार कर तथा भगवान् शंकर की कृपा प्राप्त करना ही परम पुरुषार्थ समझकर कार्य करने से उसके हृदय की गाँठ खुल जाती है, सब संशय दूर हो जाते हैं कर्म क्षीण हो जाते हैं तथा उसे भगवान शिव की प्राप्ति हो जाती है।

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे।।

सभी के आराध्य हैं - भगवान् शिव :- देवों में वे सबसे बड़े होने के कारण तो महादेव है ही, परन्तु देने वालों में भी सबसे बढ़कर देने वाले होने से भी "महादेव" हैं। उनका दान मन–मौजी है, अटपटा है, बेढ़ब हैं। उपासना से जितना शीघ्र भगवान् शंकर प्रसन्न होते हैं उतना शीघ्र प्रसन्न होने वाला भगवत् का कोई स्वरुप नहीं है।

देव, दानव, यक्ष, किन्नर, मनुष्य, ऋषि–मुनि जब किसी ने किसी शक्ति या वस्तु की इच्छा की है तो सभी प्रायः कैलाशंपति शंकर की शरण गये हैं, सभी ने उन्हीं की उपासना की हैं, उन्हीं का आश्रय लिया है और आशुतोष ने भी उनकी इच्छा पूर्ण की हैं। हिरण्याक्ष, हिरण्यकशिपु, रावण, कुम्भकर्ण, मेघनाथ, बाणासुर आदि दैत्य, दुर्दमनीय और अजेय शक्ति प्राप्त करने की लिये भगवान् शंकर की ही शरण गये हैं। भस्मासुर ने भगवान् शंकर को हीं मारने के लिए भगवान् की उपासना की, परन्तु भगवान अपनी देन से न चूके, उसको भी इच्छित वरदान दे ही दिया। तभी तो भगवान् शिव सब के आराध्य हैं।

श्रीमद्रामायण तथा श्रीमद्महाभारत रुपी इतिहास और सब पुराण, भगवान् शिव की लीला और वरदानों से भरे पड़े हैं। महर्षि अत्रि, गर्गाचार्य आदि ने पुत्र की प्राप्ति के लिये, विश्वामित्र, अश्वत्थामा आदि ने अस्त्र–शस्त्र की प्राप्ति के लिये और अन्यान्य असंख्य स्त्री–पुरुषों ने अपनी–अपनी भिन्न–भिन्न कामनाओं की प्राप्ति के लिये आशुतोष भगवान् शिव जी की उपासना की थी। यहाँ तक कि भगवान् पुण्डरीकाक्ष श्री महाविष्णु ने भी घोर तपस्या में रत हो कर भगवान् महादेव श्री शंकर जी की कमलों से पूजा की और सहस्त्रनामार्चन करने के समय एक पदम् के घट जाने पर अपने एक नेत्ररुपी कमल को निकालकर शिव जी को अपर्ण कर दिया और श्री शंकर को प्रसन्न करके उनसे सर्वशत्रुदमन करने वाले सुदर्शन चक्र को (जो भगवान् श्रीनारायण का जगत्प्रसिद्ध और खास आयुध है) प्राप्त किया। भगवान् श्रीनारायण के अवतार श्री परशुराम जी ने भी अस्त्र–शस्त्र–प्राप्ति के लिये भगवान् श्री शंकर की आराधना की थी। उन्हीं भगवान् श्री हरि के और भी पराक्रमी अवतार श्री रामचन्द्र जी

ने भी रावण को परास्त करने तथा भगवती जगन्माता श्री सीता देवी की पुनः प्राप्ति के लिये दक्षिण–सागर तट पर सेतुबन्ध में श्री रामेश्वर महादेव की स्थापना तथा उपासना की थी। उन्हीं भगवान् श्री महाविष्णु के पूर्रावतार आनन्दकन्द श्री कृष्णचन्द्र परमात्मा ने भी तो अपने शरणागत परमभक्त, शिष्य शिरोमणि और खास परम प्रेम पात्र अर्जुन को भी कुरुक्षेत्र के युद्ध में सबसे अत्यन्त उपयोगी पाशुपतास्त्र के लिये श्री शंकर की उपासना में लगाया था तथा स्वंय भी भगवती श्रीरुक्मिणी जी के उदर से पुत्र (श्री प्रद्युम्न) को तथा भगवती श्री जाम्बवती के उदर से पुत्र (श्री साम्ब) को प्राप्त करने के लिये हिमालय आदि भंयकर पर्वतों में घोर तपस्या कर बिल्वेश्वर महादेव आदि की स्थापना तथा आराधना करके, पूर्वोक्त रीति से पाण्डवों को भगवान् श्री शिव जी की महिमा बता कर श्री शिव सहस्त्र नाम का उपदेश दिया था।

आशुतोष भगवान शिव :- वास्तव में शिव जी महाराज हैं बड़े ही आशुतोष। उपासना करने वालों पर बहुत ही शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं। ये तो केवल शिवलिंग पर जल चढ़ाने से ही प्रसन्न हो जाते हैं :–

प्रीयेय तोयेन नृणां प्रपद्यता महोत्वयाऽऽत्मा भृशमर्द्यते वथा।

(श्री मद्भागवत् ४/८८/२०)

श्रीमद्भागवद् पुराण में शंकर भगवान वृकासुर से कह रहे हैं कि मैं तो अपने शरणागत भक्तों पर केवल जल चढ़ाने से ही सन्तुष्ट हो जाया करता हूँ भला तुम व्यर्थ अपने शरीर को क्यों पीड़ा दे रहे हो।

श्री महाभारत के अनुशासन पर्व में भी भगवान् शंकर स्वयं कहते हैं कि :-

ममापि परतुष्टस्य नास्ति लोकेषु दुर्लभम्।
तस्मात् ते सततं भक्ता मामेवाभ्यर्चयन्युत।।

हे देवि! मेरे सन्तुष्ट हो जाने पर लोक में कुछ भी दुर्लभ नहीं रहता हैं। इसलिए भक्त जन सदा मेरी ही पूजा किया करते हैं।

भगवान् शिव चतुर शिरोमणि होते हुए भी अपने भक्तों के लिये निरे भोले हैं। वे रुद्र होते हुए भी वस्तुतः आशुतोष ही हैं। धतूरे और आक की श्रद्धापूर्ण पुष्पाजंलि ही लोक पावन शिव की प्रसन्नता प्राप्त करवाने में पर्याप्त है। राम रसमाते **"तुलसी"** ने भी **"कवितावली"** के उत्तराखण्ड में यहीं निर्णय सुनाया है :–

इहाँ ऐसो सुख, सुरलोक सुनाथपद,
ताको फल "तुलसी" सो कहैगो बिचारि कै।
आक के पतावा चारि, फूल कै धतूरे के द्वै,
दीने हैं बारक पूरारिपर डारिकै।।

भगवान् शिव तो इतनी शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं कि केवल प्रतिदिन नियम से शिवलिंग दर्शन कर लिये जायें तब भी शिव पद की प्राप्ति हो जाती है :–

लिंग दर्शन मात्रं वा नियमेन शिवप्रदम्।

(शिव० विद्ये ११/३२)

श्रीमद्महाभारत में भगवान् श्री वासुदेव ठीक ही कहते हैं :-

एकधा चद्विधा चैव बहुधा च स एवहि।
शतधा, सहस्त्रधा चैव तथा शतसहस्त्रधा।।
ईदृशः स महादेवो भूयश्च भगवानतः।
नहिं शक्या गुणावक्तुमपि वर्ष शतैरपि।।

(श्री महा० दान० १६०/४३–४४)

भगवान् शंकर के एक, दो, अनेक, सौ, हजार और लाखों रुप हैं, भगवान् महादेव ऐसे प्रभावशाली हैं, बल्कि इससें भी बढ़कर हैं। सैकड़ो वर्षो में भी उनके गुणों का वर्णन नहीं किया जा सकता।

ॐ नमः शिवायः

शिवलिंग-रहस्य

कृत्वालिंगं सकृत पूज्य वसेकल्पायुतं दिवि।।

(ब्रह्मवैवर्त ६/३२)

ब्रह्मवैवर्त पुराण में लिखा है कि जो मनुष्य शिवलिंग का निर्माण कर एक बार भी उसकी पूजा कर लेता है वह दस हजार कल्प तक स्वर्ग में निवास करता हैं।

सभी शिव मन्दिरों में लिंग की पूजा होती हैं। केवल भारत वर्ष में ही नहीं अपितु विदेशों में भी शिवलिंग की पूजा की जाती है। स्वयं श्री रामचन्द्र जी ने रावण पर विजय प्राप्त करने के लिए रामेश्वरम् में शिवलिंग की स्थापना करके उसकी पूजा की थी।

लिंगथापि विधिवत् करि पूजा।
सिव समान प्रिय मोहि न दूजा।।

(रामचरित – लंका काण्ड)

विचार यह करना है कि यह शिवलिंग क्या है और क्यों इसकी पूजा की जाती हैं।

लिंग से अभिप्राय :-

1. साधारण अर्थ में लिंग चिन्ह, लक्षण अथवा पहचान को कहते हैं। दर्शनों में अनेक सूत्र ऐसे आते हैं जिनमें पहचान कराने वाले चिन्हों को ही लिंग कहते है जैसे पुरुष का लिंग मूँछ हैं। गो जाति के लिंग (चिन्ह) सींग, ककुद (थूहा), पूँछ, गले में कम्बल की भाँति लटकती हुई सास्ना।

"विषाणी ककुद्मान् प्रान्तेबालधिः सास्वानिति (गोत्वे दृष्टं लिंगम्)

(वै० द० अ० आ० सू० १ सु० ८)

न्याय दर्शन में लिखा है कि आकृति ही जाति की पहचान कराती है।

"आकृतिर्जातिलिंगाख्या"

कई बार तो केवल किसी व्यक्ति के लिये उसका कोई विशेष चिन्ह ही उस की पूरी आकृति एंव उसके गुण तथा कार्यो को हमारे सामने प्रत्यक्ष प्रकट कर देता है। यथा **"दशानन"** कहते ही रावण की आकृति उसके कार्य आदि सभी प्रत्यक्ष दिखाई देने लगते हैं। इसी प्रकार "पीताम्बर" अथवा सुदर्शन चक्र कहते ही विष्णु भगवान का सौम्य एंव शान्त रुप हमारे सामने प्रकट हो जाता है। केवल "बंसी वाला" शब्द कहते ही श्रीकृष्णभगवान की पूरी आकृति उनकी मनोरम लीलाएं हमारे मन मस्तिष्क पर छा जाती हैं। ठीक इसी प्रकार शिवलिंग देखते ही हमारे मन एंव हृदय में भगवान शिव का सौम्य, शान्त, कल्याणकारक मोक्षदायक आशुतोष एंव भोला रुप हमारे सामने प्रत्यक्ष हो जाता हैं। जैसे भगवान विष्णु की पूजा शालिग्राम रुपी पत्थर में की जाती है वैसे ही शिव की पूजा पाषाण या मृन्मयी शिवलिंग में की जाती हैं।

2. स्कन्द पुराण में लिंग का अर्थ "लयनाल्लिंगमुच्यते" व्युत्पत्ति से लिया है जिसका अर्थ है कि लिंग के द्वारा लय अथवा प्रलय होने से ही इसे लिंग कहते हैं निराकार परब्रह्म परमात्मा शिव सगुण हो कर सृष्टि की इच्छा करते हैं। तभी उनसे यह सृष्टि उत्पन्न होती है तथा प्रलय के पश्चात् सम्पूर्ण सृष्टि उन्हीं में समा जाती हैं। अतः लय से ही लिंग शब्द का उद्भव माना है। फिर शिवलिंग सभी प्राणियों का परम कारण, निवास होने से उनका आलय भी है। स्कन्द पुराण का यह श्लोक देखिये :–

आकाशं लिंगमित्याहुः पृथिवी तस्य पीठिका।
आलयो सर्वदेवानां लयनाल्लिगमुच्यते।।

आकाश लिंग है, पृथ्वी उसकी पीठिका है, सब देवताओं का आलय है। इसमें सबका लय होता है, इसीलिये इसे लिंग कहते हैं।

3. लिंग का एक अर्थ ज्ञापक अर्थात् प्रकट करने वाला भी हैं। इसके व्यक्त होने पर ही सृष्टि की उत्पत्ति होती हैं। यह लिंग योनि जिसका व्यवहार श्री शिव पूजा में होता है प्रकृति एवं पुरुष के संयोग से होने वाली सृष्टि की उत्पत्ति की सूचक हैं। इस प्रकार यह परम परात्पर जगपिता और दयामयी जगन्माता के आदि सम्बन्ध के भाव की द्योतक हैं।

शिवलिंग का प्रादुर्भाव :- लिंग के प्रथम प्रादुर्भाव का प्रकरण लिंग पुराण में पूर्वार्ध के सत्रहवें अध्याय में तथा शिव पुराण में रुद्र संहिता के सृष्टि खण्ड में दिया हैं। स्कन्द पुराण में भी इसकी कथा को अत्याधिक विस्तार से नन्दिकेश्वर ने मार्कण्डेय ऋषि को सुनाया है। कथा इस प्रकार है:–

एक बार विष्णु और ब्रह्मा में इस विषय पर कि परमेश्वर कौन हैं, विवाद चल पड़ा। दोनों ही अलग–अलग अपने को ईश्वर सिद्ध कर रहे थे। इस समय एक अति प्रकाशमान ज्योतिलिंग उत्पन्न हुआ। उस लिंग के प्रादुर्भाव को देखकर दोनों ने अपनी कलह–निवृत्ति का साधन समझ कर निश्चय किया कि जो कोई इस लिंग के अन्तिम भाग को स्पर्श करें वहीं परमेश्वर है। वह लिंग नीचे और ऊपर दोनों ओर था। ब्रह्मा जी तो हंस बन कर लिंग का अग्रभाग ढूढ़ँने को ऊपर उड़े और विष्णु जी ने अति विशाल एंव सुदृढ़ वराह बन कर लिंग के नीचे की ओर प्रवेश किया। इसी भाँति दोनों हजारों वर्ष तक चलते रहे, परन्तु लिंग का अन्त न पाया। तब दोनों

अति व्याकुल हो लौट आये और बार–बार उस परमेश्वर को प्रणाम कर उसकी माया से मोहित हो विचार करने लगे कि यह क्या है कि जिनका कहीं अन्त न आदि। विचार करते–करते एक ओर प्लुत स्वर से "ओ३म्, ओ३म्" शब्द सुनाई पड़ा। शब्द का अनुसन्धान करके लिंग की दक्षिण की ओर देखा तो ॐ का स्वरुप स्वयं शिव दिखाई पड़े।

शिवलिंग चिन्मय (सूक्ष्म) है स्थूल नहीं।

भगवान शिव स्वयं ब्रह्मा विष्णु जी से कहते हैं :-

यदिदं निष्फलं स्तम्भंमम ब्रह्मत्व बोधकम्।
लिंगलक्षण युक्तत्वान्मम लिंग भवेदिदम्।।

(शिव० विद्ये० ६/४१–४२)

मेरा जो यह स्तम्भ रुप हैं, यह ब्रह्म का बोधक है। लिंग के लक्षणों से युक्त होने के कारण यह मेरा निर्गुण रुप होगा। भगवान शिव आगे कहते हैं कि हे पुत्रों ! तुम दोनों इसकी प्रतिदिन पूजा करना। यह लिंग सदा मेरी आत्मा का रुप है और मेरे सन्निध्य का देने वाला हैं। लिंग एंव लिंगी (भगवान शिव) में अभेद होने के कारण इसे मेरा ही रुप समझ कर प्रतिदिन इस की पूजा करनी चाहिये।

शिव पुराण में ही सूत जी कहते हैं कि :-

तदेवलिंग प्रथमं प्रणवं सार्वकामिकम्।
सूक्ष्मप्रणव रुप हि सूक्ष्मरुप तु निष्कलम्।।

(शिव० विद्ये० १८/२७–२८)

सभी इच्छाओं को पूर्ण करने वाला सर्वप्रथम प्रणव लिंग हैं। सूक्ष्म प्रणव रुप शिव निष्फल (निराकार) हैं। (यहाँ प्रणव से अभिप्रायः "ॐ" इस मन्त्र से हैं।)

इस प्रकार यह शिवलिंग एक निष्कल निराकार रुप है, परन्तु सांसारिक प्राणि निराकार की उपासना में असमर्थ होने के कारण वह निराकार को भी एक साकार रुप दे देता है इसीलिये इसे एक स्थूल रुप दे दिया गया है जो कि अब हमें मन्दिरों में वर्तमान शिवलिंग के रुप में पाया जाता हैं।

शिवलिंग पूजा का आरम्भ :- शिवलिंग पूजा अनादि काल से चली आ रही है। प्राचीन शिवलिंग आज भी मिट्टी के नीचे से खोद कर निकाले ज़ा रहे हैं। माना जाता है कि शिवलिंग पूजा का प्रचार देवर्षि नारद ने किया था। पृथ्वी के प्राणियों को सृष्टि की इच्छा से निवृत्त होने का उपदेश देने के लिये ऋषिराज ने अनुग्रह करके इस सहज पथ का प्रचार किया हैं। इस इच्छा से निवृत्ति पाते ही मुक्ति की तथा पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है।

ऋगवेद में लिगोंपसना की चर्चा मौजूद है। वैदिक साहित्य में, संहिताओं में, ब्राह्मणों में, अरण्यकों में और उपनिषदों में रुद्रादि अनेक नामों से लिंगोपसना का वर्णन मिलता है। शिव पुराण, लिंग पुराण, स्कन्द पुराण, मत्स्य पुराण आदि सभी पुराणों में लिंग पूजा का वर्णन मिलता हैं। बाल्मीकि रामायण–उत्तराकाण्ड में रावण के कथा प्रसंग में आता हैं:–

बालुका वेदिमध्ये तु तल्लिगं स्थाप्य रावणः।
अचर्यामास गन्धैश्च पुष्पैश्चामृत गन्धिभिः।।

शिव भक्त रावण जहाँ जहाँ जाता है वहाँ स्वर्ण लिंग भी जाता है और बालु की वेदी पर पधार कर वह विधिवत् पूजा करता है और लिंग के सामने नृत्य करता है।

महाभारत के अनुशासन पर्व में तो भगवान शिव स्वयं कहते है :-

स्थापितं त्रिषुलोकेषु शिवलिंग मयामम।
नमस्कारेण वा तस्य मुच्यन्ते सर्व किल्विषैः।।

तीनों लोकों में मैने अपने स्वरुप भूत शिव लिंगो की स्थापना की हैं जिनको नमस्कार मात्र करके मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाते हैं।

शिवलिंग पूजा का लाभ :- शिवलिंग पूजा सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाली है। परन्तु अपनी कामना अनुसार शिवलिंग का निर्माण करना चाहिये यथा –

(१) "कस्तूरी" आदि से निर्माण किये हुए शिवलिंग का यथाविधि पूजन करने से शिव–सायुज्य का लाभ होता है।

(२) "पुष्पमय" लिंग का पूजन करने से भूम्याधिपत्य प्राप्त होता है।

(३) "गो–शकृत" (गोबर) का लिंग पूजन करने से ऐश्वर्य लाभ और जिसके लिये किया जाये उसकी मृत्यु होती है।

(४) "रजोयम" लिंग पूजन से विद्या धारण होती है।

(५) "धान्य" – जौ, गेहूँ और चावल आदि के चून से बने हुए लिंग को पूजने से स्त्री, पुत्र और धन मिलता हैं।

(६) "सिता" (मिश्री) के लिंग का पूजन करने से आरोग्य–लाभ होता हैं।

(७) "लवण" लिंग से सौभाग्य।

(८) "पार्थिव" से कार्यसिद्धि।

(९) "दुग्धोद्भवः" से कीर्ति, लक्ष्मी और सुख।

(१०) "नवनीत" निर्मित से कीर्ति तथा सौभाग्य।
(११) "कर्पूर" जनित से मुक्ति लाभ।
(१२) "स्वर्णमय" से महामुक्ति।
(१३) "रजत" से विभूति।
(१४) "कास्य तथा पित्तलमय" से सामान्य मोक्ष।
(१५) "सीसकादि" से शत्रुनाश।
(१६) "अष्टधातुज" से सर्वसिद्धि।
(१७) "मणिजात" से अभिमान नाश और
(१८) "पारद" निर्मित से महाऐश्वर्य प्राप्त होता है।
स्मरण रहे कि लिंग–निर्माण–विधि और उसकी पूजा विधि सम्यक प्रकार से जानकर फिर सकाम शिव–पूजन करना चाहिए।

बाणलिंग का महत्व :- पाषाण (पत्थर) निर्मित शिवलिंगों की अपेक्षा बाणलिंग की अधिक महत्ता हैं। नर्मदा नदी से मिलने वाला पाषाण लिंग ही बाणलिंग कहलाता हैं। नर्मदा नदी के सभी कंकर शंकर माने गये हैं तथा बाणलिंग इन्हें इसलिये कहते हैं कि बाणासुर ने तपस्या करके महादेव जी से वरदान प्राप्त किया था कि वे उस पर्वत पर सर्वदा लिंग रुप में प्रकट रहें।

लिंगार्चन में बाणलिंग का विशेष महत्व माना गया हैं। वह सब प्रकार से शुभ, सौम्य, सुलक्षण और श्रेयस्कर होता हैं यह मुक्ति भुक्ति दोनों का देने वाला हैं। एक बाणलिंग की पूजा से अनेक और लिंगो की पूजा का फल मिलता हैं। नर्मदा नदी से मिलने वाले बाणलिंगों में कई तो बड़े ही अद्भुत, मनोहर, विलक्षण और सुन्दर होते हैं। इनमें विशेषतः

मेघाभ और कपिल वर्ण के लिंग अधिक शुभ हैं। मन्दिरों में शिवलिंग की प्रतिष्ठा करते समय पाषाण लिंग की अपेक्षा बाणलिंग की स्थापना सुगम हैं। इसकी पूजा में आवाह्न और विसर्जन नहीं करना होता है क्योंकि इसमें भगवान शिव सदा वास करते हैं।

निर्माल्यदि-निर्णय :- शिवलिंग पर चढ़ाये हुए वस्त्र, भूषण, स्वर्ण, भूमि, रौप्य, ताम्र आदि को छोड़कर पत्र, पुष्प, फल एंव जल ये सब निर्माल्य अग्राह्य हैं परन्तु शालग्राम शिला स्पर्श से पवित्र हो जाने के कारण ग्रहण करने योग्य हो जाते हैं।

अग्राहया शिवनैवेद्यं पत्रं पुष्पं फलं जलम्।
शालग्राम शिलासंगात् सर्वं याति पवित्रताम्।।
(शिव० विद्ये २२/१६)

अर्थात् बाणलिंग के विषय में ग्राहय तथा अग्राहय का भी विचार नहीं हैं। बाणलिंग पर चढ़ा हुआ सभी कुछ (जल, फल आदि) भक्तिपूर्वक प्रसाद समझ कर ग्रहण कर सकते हैं।

न लिंगाराधनादन्यत्पुण्यं वेद चतुष्टये।
विद्यते सर्वशास्त्राणामेष एंव विनिश्चयः।।
(शिव० विद्ये २१/३२)

चारों वेदों में लिंग पूजा के समान कोई अन्य पुण्य कार्य नहीं हैं, यहीं सब शास्त्रों का निर्णय हैं।

ॐ नमः शिवायः

सर्वमंगलकारी रुद्राभिषेक

रुद्र कौन हैं :-

आशुतोष भगवान शिव के अनन्त नाम हैं। उन्हें महादेव, शम्भु, शंकर, पंचानन, सदाशिव, महेश, विश्वनाथ, विरुप, नील लोहित आदि अनेक नामों से पुकारा जाता है। इनका एक नाम रुद्र भी हैं। जिसका शिव पुराण कोटि रुद्र संहिता में वर्णन आता हैं :–

सर्वथा शिवरुपों हि रुद्रो रौद्र पराक्रमः।
उत्पन्नो भक्त कार्यार्थ हरि ब्रह्म सहाय कृत।।
(४२/१२)

अति पराक्रमी रुद्र शिव रुप ही हैं। इन्होनें भक्तो के कार्य हेतु यह रुप धारण किया है। ये सदा ब्रह्मा विष्णु की सहायता करते हैं श्रीमद्महाभारत के दान धर्म पर्व में श्री कृष्ण कहते है :–

सः वै रुद्रः सः च शिवः सोऽग्नि सर्वः स सर्वाजित्।
स चैवेन्द्रश्च वायुश्च सोऽश्विनौ सः च विद्युतः।।

वे ही रुद्र हैं, वे ही शिव हैं, वे ही अग्नि हैं, वे ही सर्व रुप हैं और सर्वे विजयी हैं। वहीं इन्द्र और वायु हैं। वे ही अश्विनी कुमार और विद्युत हैं। यहीं बात अथर्व शिरोपनिषद में भी कहीं गई है :–

यत्परं ब्रह्म स एकः य एकः स रुद्रः, यो रुद्रः, सः सो ईशानः
यः ईशानः सः भगवान् महेश्वरः।

एकादश रुद्रो के नाम :- शिव पुराण की शत रुद्रसंहिता में नन्दीश्वर जी कह रहे हैं कि –मुनिवर कश्यप की पत्नी सुरभी से देवताओं के कल्याणार्थ भगवान् शिव उनके पुत्र रुप में ग्यारह रुप धारण कर के प्रकट हुए यहीं एकादश रुद्र कहलाते हैं। जिनके नाम हैं :– कपाली, पिंगल, भीम, विरुपाक्ष, विलोहित, शास्ता,

अजपाद, अहिर्बुध्न्य, शम्भु चण्ड तथा भव।

श्रीमद्भागवत्गीता में भी श्री कृष्ण कहते हैं कि :-

"रुद्रानां शंकर चास्मि" (गीता – १०/२३)

मैं एकादश रुद्रों में शंकर हूँ। इन ग्यारह रुद्रों में शम्भु अर्थात् शंकर सबके अधीश्वर हैं तथा कल्याण स्वरुप हैं।

यजुर्वेद संहिता का सोलहवां अध्याय तो रुद्रध्याय की कहलाता हैं।

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च
नमः शिवाय चं शिवतराय च।।

(यजु० १६/४१)

कल्याण स्वरुप, संसार के लिये सुख स्वरुप लौकिक सुख देने वाले, मोक्ष प्रदान करने वाले, परम कल्याण रुप और भक्तों के अत्यन्त कल्याण कारक तथा उन्हें निष्पाप बनाने वाले रुद्र को नमस्कार हो, नमस्कार हो ! इस मन्त्र में भगवान् शंकर का परम कल्याणमय मंगल स्वरुप प्रतिपादन किया गया हैं, इस मन्त्र की उपासना से अखिल प्रेम की प्राप्ति होती है।

रुद्राभिषेक क्या है :- एकादश रुद्र अथवा शिवलिंग के पूजन के पश्चात् गंगा जल एंव दूध आदि के द्वारा शिवलिंग का अभिषेक करना (धारा प्रवाह से दूध आदि चढ़ाना) रुद्राभिषेक कहलाता है। इसमें शिव परिवार का पूजन करने के पश्चात् भगवान शिव का ध्यान करते हुए शिवलिंग की षोडशादि उपचारों से पूजा की जाती हैं। तत्पश्चात् यजुर्वेदादिक मन्त्रों द्वारा धारा प्रवाह से गंगा जल, दुग्ध, रत्नोदक आदि के द्वारा अभिषेक किया जाता हैं। पुनः भगवान शिव का पूजन किया जाता हैं, जो उत्तर पूजन कहलाता हैं। इसके बाद आरती, स्तुति, क्षमा प्रार्थना आदि की जाती है। विधि विधान से की जाने वाली भगवान शिव की इस पूजा को रुद्रभिषेक कहते हैं।

यह रुद्रभिषेक पंचाक्षर मन्त्र (नमः शिवाय्) षडक्षर मन्त्र (ॐ नमः शिवायः) रुद्र सूक्त (रुद्री के पंचम अध्याय के १६ मन्त्र)

एंव रुद्री के पंचम अध्याय के पूरे मन्त्रों से, लघु मृत्युञ्जय मन्त्र, महा मृत्युञ्जय मन्त्र, गायत्री मन्त्र, शिव के शास्त्रोक्त नामों के आदि में प्रणव (ॐ) और अन्त में "नमः" पद जोड़ कर बने मन्त्रों से, यजुर्वेद के मन्त्रों से अर्थात् रुद्राष्टाध्यायी से जिसका सीधा पाठ षडंग कहलाता है तथा "नमका चमका" से युक्त ग्यारह अनुवाकों में किया गया पाठ एकादशिनी रुद्री के नाम से प्रसिद्ध हैं, ऋगवेद एवं सामवेद के मन्त्रों से लिंग सूक्त तथा अथर्वशीर्ष आदि के मन्त्रों से किया जा सकता हैं। परन्तु इन सभी विधियों में **रुद्राष्टाध्यायी** (रुद्रीपाठ) द्वारा अभिषेक सरल एवं अधिक प्रचलित है। कामना के अनुसार यह भी कई प्रकार से किया जाता है। एकादशिनी रुद्री की ग्यारह आवृत्ति होने पर लघुरुद्र, लघरुद्र की ग्यारह आवृत्ति होने पर महारुद्र, महारुद्र ग्यारह आवृत्ति होने पर अतिरुद्र की संज्ञा दी गई है। इस प्रकार उत्तरोत्तर इन तीनों प्रकार के अनुष्ठानों (रुद्राभिषेकों) की धर्मग्रन्थों में बड़ी महिमा बताई गई हैं। तथा विधि विधान से किये जाने पर यह प्राणि का सर्व प्रकार मंगल करते हैं। श्रीरामचरितमानस में तुलसीदास जी लिखते हैं कि :—

विप्र जेवाइं देहि दिन दाना।
सिव अभिषेक करहि विधि नाना।।

जिस समय राजा दशरथ स्वर्ग सिधार गये, भरत जी को ननिहाल में दुःस्वपन दिखाई देने लगे अतः उन्होनें भी अनिष्ट शान्ति के लिये ब्राह्मण को भोजन खिलाया एवं अनेक विधियों से भगवान शिव का रुद्राभिषेक किया।

एक अन्य स्थल पर तुलसीदास जी लिखते हैं :-

जे रामेश्वर दरसनु करहि। ते तनुतजि ममलोक सिधरहि।
जो गंगा जल आनि चढ़ाई हि। सो सायुज्य मुक्ति नर पाइहि।।

श्री रामेश्वर लिंग की स्थापना, पूजन, अर्चन एंव स्तवन के पश्चात् रामचन्द्र जी कहते है कि जो मनुष्य मेरे स्थापित किये हुए

इन रामेश्वर (भगवान शिव) जी का दर्शन करेगें वे शरीर छोड़ने पर मेरे लोक को जायेगें तथा जो भक्त गंगा जल ला कर शिवलिंग का अभिषेक करेगें वे मनुष्य तो सायुज्य मुक्ति को हीं प्राप्त कर लेगें।

रुद्राभिषेक की महिमा :- मनुष्य श्रद्धा एवं विश्वास के साथ विधि विधान से अगर रुद्राभिषेक करें तो उसकी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं। यह मंगल (आनन्द) का देने वाला हैं। तथा प्राणि के सभी पापों को नष्ट कर सायुज्य मुक्ति तक प्रदान कर देता हैं। लौकिक इच्छाओं की तो बात ही क्या है वह तो इस के करने से बड़ी सरलता से प्राप्त हो जाती हैं।

श्रीमद् महाभारत के दान धर्म पर्व में वेद व्यास जी लिखते हैं:-

फलं वा यदि वा शाकं पुष्पं वा यदि वा जलम्।
दत्त सम्प्रीणयेद् देवि भक्तैर्मद्गत मानसैः।।
केवलेनापि तोयेन स्नापयेद् यः शिवं मम।
स चापि लभते पुण्यं प्रियं चलभते नरः।।

भगवान शिव स्वयं जगत्जननी माँ उमा को शिवलिंग पूजन एवं अभिषेक का विधान बताते हुए इसकी महिमा का वर्णन करते हैं – हे देवि ! मुझ में मन लगाए रहने वाले मेरे भक्तों का दिया हुआ फल, फूल, साग अथवा जल भी मुझे विशेष प्रिय लगता है तथा जो भक्त केवल जल से भी मेरे शिवलिंग को नहला देता हैं वह भी पुण्य का भागी हो जाता और अभीष्ट फल को प्राप्त कर लेता हैं अर्थात् उसका सभी प्रकार का मंगल हो जाता हैं। शिव पुराण की रुद्र संहिता के सृष्टि खंड मे ब्रह्मा जी कहते हैं कि :–

सर्वाभावे बिल्वपत्रपर्यणीयं शिवाय वै।
बिल्व पत्रार्पणेनैव सर्व पूजा प्रसिध्यति।।

यदि पुष्प आदि अन्य सामग्री न मिले तो केवल बिल्व पत्र हीं शिवजी को चढ़ा दें। केवल बिल्व पत्रों के चढ़ाने से हीं सम्पूर्ण पूजा सफल हो जाती हैं तथा बिल्व पत्र के साथ जल भी अगर चढ़

जाये, चाहे वह अनजाने में ही हो तो मनुष्य के सभी मनोरथ पूरे जाते हैं यहाँ तक कि मुक्ति भी मिल जाती हैं।

एक भील पर भगवान शंकर की अद्भुत कृपा :- शिवपुराण की कोटि रुद्र संहिता के चालीसवें अध्याय में एक भील जो कि दुरात्मा था तथा शिकारी भी था, उसकी मुक्ति की कथा दी हुई हैं। वन में रात हो जाने पर वह एक वृक्ष का सहारा ले कर रात्रि बिताने के लिये उस पर बैठ गया। इस वृक्ष के नीचे एक शिवलिंग था। शिकारी को इसकी कोई जानकारी नहीं थी। वृक्ष बिल्व पत्र का था। रात्रि में जब भी भील हिलता बिल्व पत्र टूट कर नीचे शिवलिंग पर गिर जाते तथा उसके बर्तन में रखा हुआ जल भी गिर जाता। यह क्रम सारी रात्रि चलता रहा। सौभाग्यवश उस दिन शिवरात्रि थी तथा इस प्रकार बार–बार बिल्व पत्र गिरने तथा जल द्वारा शिवलिंग का अभिषेक होने से उस भील की शिवरात्रि पर रात्रि को की जाने वाली चारों प्रहर की पूजा सम्पन्न हो गई। आशुतोष भगवान शिव ने उस भील को साक्षात् दर्शन दिये तथा उसे मुक्ति प्रदान कर दी। अगर अनजान में, बगैर विधि विधान के एक दुरात्मा भील की पूजा एवं अभिषेक मुक्ति प्रदान कर सकता हैं तो शास्त्रोक्त मन्त्रों द्वारा किया हुआ रुद्राभिषेक तो शिव भक्त की सभी मनोकामनाओं को पूर्ण कर ही देगा। यह सत्य हैं।

सुधर्मा की यमपाश से मुक्ति :- शिवांक में कथा है कि काश्मीर देश में भद्रसेन राजा का पुत्र सुधर्मा महान शिव भक्त था। वह नित्य सर्वांग में विभूति धारण करता, गले में रुद्राक्ष की माला पहनता और सदा शिव पूजन में लगा रहता था। एक बार महामुनि पाराशर जी राजा के यहाँ पधारे और उन्होनें बताया कि सातवें दिन सुधर्मा की अकाल मृत्यु हो जायेगी। परन्तु यदि दस हजार रुद्रावर्तन से भगवान शंकर जी पर अभिषेक (धारा) किया जायें तो सुधर्मा की मृत्यु टल सकती हैं। राजा ने सामग्री एकत्रित करके रुद्राभिषेक प्रारम्भ करवा दिया। सातवें दिन दोपहर के

समय उसकी मृत्यु हो गयी। पाराशर मुनि ने रुद्राभिषेक के तीर्थ (अभिषिक्त जल) से सुधर्मा के मृत शरीर को सींचा और पवित्र मन्त्रीकृत रुद्राक्ष के द्वारा कुछ जल उसके मुँह में डाला। आशुतोष भगवान शिव की कृपा से राजकुमार सुधर्मा जीवित हो गया। पूछने पर सुधर्मा ने बताया कि उसे यमराज ले जा रहे थे इतने में ही अकस्मात् एक तेजोमयी, श्वेतकाय, जटा जूटधारी मूर्ति ने प्रकट हो कर उसे यमराज से छुड़ा लिया तथा यमराज ने उस जटाजूटधारी भगवान शिव की स्तति भी की। सत्य है कि रुद्राभिषेक की महिमा अपरम्पार हैं वह मृत व्यक्ति को पुनः जीवित कर देती हैं।

रुद्राभिषेक हेतु विभिन्न द्रव्य-विभिन्न फल :-

"सुखसन्तान वृद्धयर्थं धारा पूजनमुत्तमम्"

(शिव० रुद्र सृष्टि १४/७१)

शिव पुराण की रुद्र संहिता के सृष्टि खंड में रुद्राभिषेक का विशद वर्णन है। वहाँ विस्तार से बताया गया है कि किस मनोरथ हेतु कौन से द्रव्य से रुद्राभिषेक करना चाहिये। यथा वंश विस्तार हेतु शुद्ध घी की धारा, बुद्धिमान बनने हेतु चीनी मिला हुआ दूध, सुख भोग आदि के लिये सुगन्धित तेल, शत्रु नाश हेतु सरसों का तेल, सभी आनन्द (मंगल) प्राप्ति हेतु गन्ने का रस आदि विभिन्न मनोरथों के अनुसार विभिन्न द्रव्यों द्वारा रुद्राभिषेक करना चाहिये। **"धारा गंगा जलस्यैव मुक्ति फल प्रदा"** गंगा जल की धारा चढ़ाने से तो मुक्ति एवं भुक्ति दोनों ही प्राप्त हो जाती हैं।

पार्थिव पूजा द्वारा उत्तम फल प्राप्ति :- शुद्ध मिट्टी के बने हुए शिवलिंग को पार्थिव लिंग कहते हैं तथा इसकी पूजा को पार्थिव पूजा कहा जाता हैं शिव पुराण के विद्येश्वर संहिता में सूत जी कहते हैं कि सतयुग में रत्नमय लिंग, त्रेता में स्वर्णमय लिंग द्वापर में पारदनिर्मितलिंग तथा कलियुग में पार्थिव लिंग उत्तम कहा गया हैं। इसकी पूजा पुण्य प्रद है, आयु बढ़ाती हैं, तुष्टि देती हैं, उत्तम

स्वास्थ्य देती हैं, धन की प्राप्ति कराती है तथा सभी मनोरथ सिद्ध करती हैं। कामना अनुसार पार्थिव लिंगो की संख्या भिन्न–भिन्न रखनी होती हैं। विद्यार्थी एक हजार, धनार्थी पाँच सौ, पुत्रार्थी डेढ़ हजार, वस्त्र प्राप्ति का इच्छुक पाँच सौ बन्धन से छूटने के लिये डेढ़ हजार, दरिद्रता से मुक्ति पाने के लिये पाँच हजार, तथा मोक्ष प्राप्ति हेतु एक करोड़ शिवलिंगो का पूजन एवं अभिषेक करना चाहिये। जो मनुष्य इस भूलोक में करोड़ पार्थिव लिंगों का पूजन, अर्चन एवं अभिषेक कर लेता है वह तो साक्षात् शिव हो जाता हैं।

रुद्राभिषेक सर्वमंगलकारी है :-

ब्रह्मा जी शिव पुराण की रुद्र सहिंता खंड के चतुर्दश अध्याय में कहते है कि :-

एत द्वै सफलं लोके सर्वकामहितावहम्।
अत्र भुक्त्वखिलं सौख्यं पुत्र पौत्रदिभिः शुभम्।।
ततो याति महेशस्य लोकं सर्व सुखावहम्।।

यह रुद्राभिषेक विधि सभी कार्यो को पूर्ण करने में सफल होती हैं। भगवान शिव की अराधना में इस विधि को अपनाने वाले इस लोक में पुत्र–पौत्र आदि के साथ सभी प्रकार के सुखों को भोग कर अन्त में वह सब प्रकार के सुख देने वाले शिवलोक को चला जाता है इस प्रकार यह रुद्राभिषेक हमारी सभी लौकिक एवं परलौकिक मनोकामनाओं को पूर्ण करता हुआ सर्व प्रकार मंगल ही करता हैं।

ॐ नमः शिवायः

शिव पूजन एवं रुद्राभिषेक विधि

शिव पूजन एवं रुद्राभिषेक की अनेक विधियाँ हमारे धर्मग्रन्थों में बताई गई हैं। यहाँ पर यजुर्वेदीय मन्त्रों द्वारा अर्थात् रुद्राष्टाध्यायी द्वारा सर्वाधिक प्रचलित, सरल एवं सर्वमंगलकारी विधि वर्णन की जा रही हैं।

रुद्राभिषेक कर्ता को अपनी इन्द्रियाँ वश में करके, चंचल मन को सांसारिक वासनाओं से रोककर, एकाग्रचित्त होकर, श्रद्धा एवं विश्वास के साथ आशुतोष भगवान शिव में अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहियें। श्रद्धा एवं सामर्थ्य अनुसार पूजन एवं अभिषेक की सामग्री लेकर तथा देशी घी का दीप जलाकर अपनी बाईं ओर रख लेना चाहिये। अक्षत (चावल) को केसर अथवा रौली से रंग लेना चाहिये। शुद्ध जल से आसन शुद्धि व शरीर शुद्धि करके तीन बार आचमन एवं प्राणयाम भी कर लेना चाहिये। तथा पुरोहित द्वारा रक्षा बन्धन एवं तिलक करण भी करा लेना चाहिये। ध्यान रहे इस समय हाथ में कुछ दक्षिणा अथवा पुष्प अवश्य हो।

सर्वप्रथम अपने देश, निवास स्थान, अपना नाम, गोत्र आदि का उच्चारण करते हुए रुद्राभिषेक हेतु अधिकार प्राप्त करने के लिए कायिक, वाचिक, मानसिक, सांसारिक सभी पापों के नाश हेतु, शरीर शुद्धि हेतु भगवान् शिव के पूजन एवं रुद्राभिषेक कराने वाले पुरोहित का नाम एवं गोत्र का उच्चारण करते हुए यथाशक्ति उसे दक्षिणा देने का संकल्प करे। पुष्प, अक्षत, जल, द्रव्य, दक्षिणा लेकर स्वस्ति वाचन करें।

स्वस्ति वाचन मन्त्र :-

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु व्विश्वतो दब्धासोऽअपीरतासऽ उद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवो रक्षितारों दिवेदिवे।।
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानौ रातिरभि नो निवर्त्तताम्।
देवानां सख्यमुपसेदिमा व्वयं देवा न ऽआयुः प्प्रतिरन्तु जीवसे।।
तान् पूर्व्वया निविदा हूमहे व्वयं भगं मित्रमदिति दक्षमस्त्रिधम्।
अर्य्यमणं व्वरुणर्ठ० सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्क्करत्।।

तन्नो व्वातो मयोभु व्वातु भेषजं तन्न्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः।
तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुतस्तदश्विना श्रृणुतं धिष्ण्या युवम्।।
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्।
पूषा नोयथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।
स्वस्ति नो इन्द्रो व्वृद्धश्श्रवाः स्वस्ति न÷पूषा व्विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्द्दधातु।।
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं य्यावानो व्विदथेषु जग्ग्मयः।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो व्विश्वे नो देवाऽअवसागमन्निह।।
भद्द्रं कर्ण्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्द्रं पश्येमाक्षभिर्य्य जत्त्राः।
स्थिरैरङै०स्तुष्टुवा सस्तनूभिर्व्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।
शतमिन्नु शरदोऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्क्रा जरसं तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मद्ध्या रीरिषतायुर्ग्गन्तोः।।
अदितिर्द्यौर दितिरन्तरिक्षमदितिर्म्माता स पिता स पुत्रः।
व्विश्वे देवाऽअदितिः पञ्च जनाऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम्।।
(यजु० २५/१४–२३)

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरि क्षठे० शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
व्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व्वर्ठ०
शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।(यजु० ३६/१७)
यतोयतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरु।
शन्नः कुरु प्प्रजाभ्योऽभयंनः पशुब्भ्यः।।
ॐ गणानां त्वा गणपनिर्ठ० हवामहे प्रियाणा त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे
निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे व्वसो मम।
आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।।(यजु० २३/१६)
ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्द्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।(पौराणिक)

सुशान्तिर्भवतु। श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः।ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ सिद्धिबुद्धिराहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। इति नमस्कृत्य, सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गज कर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।१।।

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।

द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणु यदापि।।२।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।३।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।४।।
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजिता यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।५।।
सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।६।।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः।।७।।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि।।८।।
लाभस्तेषां जयस्तषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दी वरश्यामो हृदयस्थो जनार्दन।।९।।
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।१०।।
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।११।।
स्मृते सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।।१२।।
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः।।१३।।
विश्वेशं माधवं ढुण्ढि दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशी गुहां गंगा भवानीं मणिकर्णिकाम्।।१४।।
वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।१५।।
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्माविष्णुमहेश्वरान्।

सरस्वती प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थविद्धये।।१६।। (पाराणिक मंत्र)

(अक्षत पुष्प आदि प्रतिष्ठित गणेश गौरी की मूर्तियाँ हो तो उन पर वर्ना पूजा की थाली में चित्रित अथवा पूंगी आदि पर रौली लपेटकर बनाये हुए गणेश–गौरी पर चढ़ायें।)

संकल्प :-

पुनः अक्षत पुष्प जलादि लेकर संकल्प करें –

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुष विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽन्हि द्वितीयपराधें श्रीश्वेतवाराहमल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते अमुकक्षेत्रे [अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने आनन्दवने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे] विक्रमशके बौद्धावतारे षष्टयब्दानां मध्ये अमुकसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामांगलयप्रदमासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशि स्थिते देवगुरौ शेषेषुग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रह गुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ।

सभी शिवभक्त अपना नाम, गोत्र मनोरथ, कौनसे द्रव्य का शिवलिंग है यथा बाणलिंग (नर्मदेश्वर) आदि, ब्राह्मणों की संख्या का उच्चारण करते हुए कहेंगे कि मैं रुद्राष्टाध्यायी (यजुर्वेद के मन्त्रों) द्वारा श्री साम्बसदाप्रीत्यर्थ (उमासहित भगवान शिव की प्रीतिहेतु) षोडश उपचारों से रुद्राभिषेक करने के लिए शिव पूजंन कर रहा हूँ। प्रारम्भ में निर्विघ्नता हेतु गणेश एवं गौरी का पूजन कर रहा हूँ, ऐसा संकल्प करते हुए अक्षत पुष्प आदि गणेश एवं गौरी पर चढ़ा दें।

गणेश-गौरी पूजन

आवाहन — पुष्प हाथ में लेकर गणेश एवं गौरी का ध्यान करते हुए आवाहन करें।

ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधिनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम।

आहमजानि गर्ब्भधमा व्वमजासि गर्ब्भधम्। (यजु० २३/१६)
ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्द्रिकां काम्पीलवासिनीम्। (यजु० २३/१८)

प्राणप्रतिष्ठा :-

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं
यज्ञर्ठ० समिमं दधातु।
विश्वेदेवास इह मादयन्तामौँ३म्प्रतिष्ठ।। (यजु० २/१३)
आवाहयामि, स्थाप्यामि, पूज्यामि
(यह उच्चारण करते हुए पुष्प छोड़दें)

आसन — रम्यं सुशोमनं दिव्यं सर्वसौरव्य करं शुम्भु।
आसनञ्च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।। (पौराणिक)
(श्री गणेशाम्बिका म्यां नमः आसनं समर्पयामि)

यह उच्चारण करते हुए आसन हेतु पुष्प अर्पण करें।

पाद्य — पादयोपाद्यं समर्पयामि (जल एवं अक्षत चढ़ायें)

आचमन — आंचमनीयं समर्पयामि (कर्पूर से सुवासित शीतल जल चढ़ायें)

स्नान — स्नानं समर्पयामि (पुष्प से शुद्ध जल चढ़ायें)

पंचामृत — ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सहित।। (यजु० ३४/११)
(पुष्प से पंचामृत स्नान कराकर शुद्ध स्नान कराएँ)
पञ्चामृत स्नानान्ते शुद्धोंदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्र-उपवस्त्र — वस्त्रं उपवस्त्रं समर्पयामि। (मौलि चढ़ायें)

यज्ञोपवीत — यज्ञोपवीतं समर्पयामि। (यज्ञोपवीत चढ़ायें)

चन्दन — श्री खण्ड चन्दनं दिव्यं गन्धाढयं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ। चन्दनं प्रंति गृहयताम्।। (पौराणिक)
(पुष्प से चन्दन की छीटें लगायें)

अक्षत -- अक्षतां समर्पयामि। (कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ायें)

पुष्पमाला — पुष्पमालां समर्पयामि। (पुष्पमाला चढ़ायें)

दूर्वा — ॐ काण्डा काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्त्रेण शतेन च।। (यजु० १३/२०)
दूर्वाकुरान् समर्पयामि (दूर्वा (हरीघास) चढ़ायें।)

बिल्वपत्र — त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं त्रिधायुधम्।
त्रिजन्मापापसंहारं बिल्व पत्रं शिवार्पणम्।।
(बिल्वपत्राणि समर्पयामि। बिल्वपत्र समर्पित करें)

धूप — धूपमाघ्रापयामि (धूप दिखायें)

दीप — दीपं दर्शयामि
(हाथ से दीपक की ज्योति दिखायें तत्पश्चात् शुद्ध जल से हाथ धोलें)

नैवेद्य — नैवेद्यं निवेदयामि (मिष्ठान्न निवेदन करें।
नैवेधान्तेध्यानम्, ध्यानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।
भगवान का ध्यान करे आचमन के लिये पुष्प से जल चढ़ाये)

ऋतुफल — फलेन फलितं सर्व त्रैलोकयं सचराचरम्।
तस्मात् फल प्रदानेनपूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
ऋतुफलं निवेदयामि।
(ऋतुफल चढ़ायें तथा आचमन हेतु जल चढ़ायें)

ताम्बूलपूंगी फल — मुखवासर्थे ताम्बूलपूंगी फल रालालवगम् समर्पयामि। (इलायची, लौंग सुपारी के साथ पान समर्पित करें)

द्रव्यदक्षिणा — ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषाविधेम।।
(यजु० २५/१०)

द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि
(सामर्थ्य अनुसार द्रव्य दक्षिणा (रुपया आदि) चढ़ायें)

पुष्पाञ्जलि —

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त पत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः।।
(यजु० ३१/१६)

पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि (मन्त्र पुष्पाञ्जलि समर्पण करें तदनन्तर प्रणामं एवं पूजन कर्म गणेश एवं गौरी को अर्पण करें)

क्षमाप्रार्थना — विधनेश्वराय वरदाय सुर प्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुवियज्ञ विभूषिताय। गौरी सुताय गणनाय नमो नमस्ते।
देवि प्रपन्नार्ति हरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहिविश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।।
(दुर्गासप्तशति ११/३)

(हाथ जोड़कर गणेश गौरी से क्षमा प्रार्थना करलें)

नन्दीश्वर, वीरभद्र, कुबेर, कीर्तिमुख पूजन – इन सब का ध्यान करते हुए पुष्प, जल, चंन्दन, नैवेद्य चढ़ाते हुए तथा दीप दिखा कर पंचोपचार से इन सभी का पूजन कर लें। इसी प्रकार कलश पूजन भी कर लें। जलहरी में सर्प का आकार हो तो सर्प का भी पूजन कर लें।

शिव पूजन — अब साम्बसदाशिव का ध्यान करें –

ध्यानम्–ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलागं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृतिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।
(शिव० विद्ये० २०/५२)

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, ध्यानं समर्पयामि।

मैं उस महेश (भगवान शिव) का प्रतिदिन ध्यान करता हूँ जिनकी अंगकान्ति चाँदीं के पर्वत के समान गौरे वर्ण है। वे अपने मस्तक पर मनोहर चन्द्रमा का मुकुट धारण करते हैं। रत्नो के

समान उज्जवल शरीर वाले हैं। उनके चार हाथों में क्रमशः परशु (फरशा), मृगमुद्रा, वरदान एवं अभय मुद्रा सुशोभित है। वे सदा प्रसन्न रहते हैं। कमल के आसन पर बैठे हैं और देवता लोग चारों ओर खड़े होकर उनकी स्तुति कर रहे हैं। उन्होंने वस्त्र की जगह व्याघ्र चर्म धारण कर रखा हैं। वे इस विश्व के आदि है, बीज (कारण) रुप है तथा सभी के समस्त भय हर लेने वाले है उनके पाँच मुख है ओर प्रत्येक मुख मण्डल में तीन तीन नेत्र हैं।

आवाहनम् – ॐ नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः
शंकराय च मयस्क्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।
श्री भगवते साम्बसदाशिवाय नमः, आवाहनं समर्पयामि।
आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

प्राणप्रतिष्ठा – ॐ मनो जूति र्ज्जुष – (गौरी गणेश की प्रतिष्ठा से यह मन्त्र देख लें)

(ध्यान रखें बाणलिंग (नर्मदेश्वर) की आवाहन एवं प्राणप्रतिष्ठा नहीं की जाती क्योंकि उसमें सदैव भगवान शिव अवस्थित रहते हैं। अन्य लिंगो के लिये आवाहन हेतु पुष्प तथा प्राण प्रतिष्ठा एवं आसन हेतु बिल्वपत्र समर्पित करें)

पाद्य — नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे।
अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः। (यजु० १६/८)
पाद्यं समर्पयामि (जलएवं अक्षत चढ़ायें)

अर्ध्य — तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।
अर्ध्य समर्पयामि
(अक्षत, पुष्प, चन्दन, चावल, दूर्वादल सहित जल चढ़ायें)

आचमन — त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः। (यजु० ३/६०)
आचमनीयं समर्पयामि (कपूर से सुवासित जल चढ़ाये)

गन्धोदकस्नानम् – ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।। (ऋग्वेद श्रीसूक्त)
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, गन्धोदकस्नानं समर्पयामि।
गन्धोदकस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
(चन्दन मिले हुए जल से स्नान करायें फिर शुद्ध जल से स्नान करायें)

उद्वर्तनस्नानम् – ॐ अर्ठशुना ते अर्ठ०शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोमभवतु मदाय रसो अच्युतः।। (यजु० २०/२७)
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, उद्वर्तनस्नानं समर्पयामि।
उद्वर्तनस्नानान्ते शुद्धोकस्नानं समर्पयामि। उबटन युक्त (कालेतिल का उपटन) जल से स्नान करायें फिर शुद्ध जल से स्नान करायें)

विजयास्नानम् – ॐ विज्यं धनुः कपर्द्दिनो विशल्यो बाणवाँ२
ऽउत। अनेशन्नस्य इषव आभुरस्य निषंगधिः।। (यजु० १६/१०)
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, विजयां समर्पयामि।
विजयासमर्पणान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (भांग युक्त जल से स्नान कराये फिर शुद्ध.जल से स्नान करायें)

पञ्चामृतस्नानम् – ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।। (यजु० ३४/११)
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।
पञ्चामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
अथवा पृथक्–पृथक् पञ्चामृतेन स्नानं कार्यम्।
दूध, दही, घी, शहद, चीनी ये पंचामृत है इनसे भगवान शंकर को स्नान करायें।

शुद्धोदकस्नानम् – ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालों मणिवालस्त
ऽआश्विनाः। श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा
ऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरुपाः पार्जन्याः।।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।
(यजु० २४/३)
(शुद्ध जल से स्नान करायें)

वस्त्रम् उपवस्त्रम् – ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरुथमासदत्स्वः।
व्वासोऽअग्ने व्विश्वरुपर्ठ० संव्ययस्व व्विभावसो।। (यजु० ११/४०)
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।
(मौलि (कलावा) चढ़ायें)

यज्ञोपवीतम् – यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपतीतेनोपनह्यामि।
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।
यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।
(यज्ञोपवीत समर्पित करें एवं आचमन हेतु जल चढ़ायें)

गन्धः – ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वा मिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा व्विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत।। (यजु० १२/६८)
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।।
(चन्दन लगायें)

भस्म – ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने।
सर्ठ० सृज्य मातृभिष्ट्वं ज्ज्योतिष्मान् पुनरासदः। (यजु० १२/३८)
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, भस्म समर्पयामि।। (भस्म लगायें)

अक्षताः – ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रियाऽअधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो व्विप्रा न विष्ठ्ठया मती योजान्विन्द्रते हरी।। (रौली युक्त चावल चढ़ायें) (यजु० ३/५२)
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, अक्षतान् समर्पयामि।।

पुष्प एवं पुष्पमाला – ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा ऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः।। (यजु० १२/७७)
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।।
(पुष्प एवं पुष्पमाला चढ़ायें)

बिल्वपत्रणि – ॐ नमो बिल्मिने चैक्वचिने च नमो व्वम्मिणे च व्वरुथिने च नमः श्श्रुताय च श्श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुब्याय चाहनन्याय च।।

(यजु० १६/३५)

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, बिल्वपन्नणि समर्पयामि।।

(ग्यारह बिल्वपत्र समर्पित करें)

तुलसीमंजरी – ॐ शिवो भव प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वमग्डिरः।
मा द्यावापृथिवी अभि शोचीर्मान्तरिक्षम्मा वनस्पतीन्।।
तुलसी मंजरीम् समर्पयामि (तुलसी मंजरी समर्पित कर दें)

शमीपत्र – अमंगलानां शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च।
दुःस्वमनाशिनीं धन्यां प्रपद्येऽहं शुभाम्।।
शमीपत्राणि समर्पयामि (शमीपत्र चढ़ायें)

दूर्वाकुराः – ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्व्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।। (यजु० १३/२०)
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, दूर्वाग्कुरान्समर्पयामि।
(दूध, हरीघास चढ़ायें)

धत्तूरफलानि – कार्षिरसि समुद्द्रस्य त्त्वाक्षित्त्या ऽउन्नयामि।
समापो ऽअभ्दिरग्मत समोषधीभिरोषधीः।।
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, धत्तूरफलानि समर्पयामि।

(यजु० ६/२८)

(आकधतूरा आदि पदार्थ चढ़ायें)

नानापरिमलद्रव्याणि – ॐ अहिरिव भोगैः पर्वेति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तध्नो व्विश्वा व्वयुनानि व्विद्वान् पुमान् पुमा संपरि पातु व्विश्वतः।।

(यजु० २६/५१)

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

(अबीर गुलाल आदि चढ़ायें)

सुगन्धिद्रव्यम् – ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

त्र्यम्ब : : महे सुगन्धिं पतिवेदनम्। (यजु० ०३/६०)
उर्व्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः।।
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, सुगन्धिद्रव्यम् समर्पयामि।
(सुगन्धित तेल, इत्र आदि चढ़ायें)

धूपः – ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं तं योऽस्मान् धूर्व्वति तं धूर्व्व यं व्वयं धूर्व्वामः। देवानामसि व्वन्हितमर्ठ० सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।। (यजु० ०१/८)
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, धूपमाघ्रापयामि। (धूप दिखायें)

दीपः – ॐ अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्यो ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।
अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा।
ज्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।। (यजु० ३/६)
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, दीपं दर्शयामि।
हस्तौ प्रक्षाल्य, (दीप दिखलायें एवं हाथ धोलें)

नैवेद्यम् – ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शूष्मिणः।
प्रप्र दातारं तारिषऽ ऊर्ज्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।
(यजु० ११/८३)
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, नैवेद्यम् निवेदयामि।
नैवेद्ये बिल्वपत्रं प्रक्षिप्य, ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ आचमनीयं स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। (यजु० २२/२३)
आचमनीयं जलं समर्पयामि। मध्ये पानीयं समर्पयामि। उत्तरापोशनं समर्पयामि। (नैवेद्य निवेदन करे तथा आचमन हेतु जल समर्पित करें। ध्यान मुद्राओं का भी प्रदर्शन करें।)

करोद्वर्तनार्थ चन्दनम् – ॐ अर्ठ० शुना ते अर्ठ० शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदायरसो ऽअच्युतः।। (यजु० २०/११)
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

(हाथों में चन्दन, इत्र आदि मलने के लिए छिटें लगायें)

ऋतुफलम् – ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वर्ठ० हसः। (यजु० १२/८६)
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, ऋतुफलम् समर्पयामि।
(फल समर्पित करें)

सफलताम्बूलम् – ॐ उत स्मस्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्ण्णं न वेरनुवाति प्रगर्धिनः।
श्येनस्येव ध्रजतोंऽअंकस परि दधिक्राब्णः सहोर्ज्जा तरित्रतः स्वाहा।।
(यजु० ६/१५)
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, मुखशुद्ध्यर्थ सफलताम्बूलम् समर्पयामि।
(मुख शुद्धि हेतु लौंग, इलायची, सुपारी सहित पान समर्पित करें)

दक्षिणाद्रव्यम् – ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।
(यजु० १३/४)
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, कृताया पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।
(सामार्थ्य अनुसार दक्षिणा चढ़ायें)

आरर्तिक्यम् – ॐ इदर्ठ० हविः प्रजननं में ऽअस्तु दश वीरर्ठ० सर्व्वगणर्ठ० स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि।
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो ऽअस्मासु धत्त।।
(यजु० १६/४८)
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, कर्पूरार्क्तियं समर्पयामि।
(कपूर से आरती करें आरती के बाद जल गिरायें फूल चढ़ायें फिर दोनों हाथों से आरती लेकर हाथ धोलें)

मन्त्रपुष्पाञ्जलिः – ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानिधर्म्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साध्याः सन्ति देवाः।।
(यजु० ३१/१६)
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, मन्त्रपुष्पाञ्पलिः समर्पयामि।
(मन्त्र पुष्पांजलि समर्पित करें)

शिवगायत्री – ॐ तुत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, शिवगायत्रीं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा – ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निर्षगिणः।
तेषाँ सहस्त्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।
श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि। (यजु० १६/६१)
(हाथ से बैठे बैठे ही प्रदक्षिणाकरें)
प्रणाम तत्पश्चात् हाथ जोड़कर भगवान शिव को प्रणाम करें
ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय चमयस्कराय च
नमः शिवाय च शिव तराय च।

प्रार्थना :– कर्पूर गौरं करुणावतारं संसार सारं भुजगेन्द्रहारं।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामी।।
इसके बाद क्षमा याचना करते हुए।

अर्पणम् – अनेनावाहनादिषोडशोपचारैरन्योपचारैश्च यथाज्ञानेन यथामिलितोपचारद्रव्यैः कृतेन पूजनाख्येन कर्मणा भगवान् श्रीसाम्बसदाशिवदेवताः प्रीयतां न मम।
ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

इस प्रकार आवाहन आदि षोडश उपचारों से जो मैनें पूजा की है उसमें कोई भूल हो गयी हो उसे आप क्षमा कर देना। तथा यह पूजन मैं श्री साम्बसदाशिव के अर्पण रहा हूँ आप प्रसन्न होकर मेरे ऊपर कृपा कीजिये।

ब्राह्मणवरणम् :– शिव पूजन के पश्चात् ब्राह्मण (पुरोहित) के पैर धोकर मस्तक पर तिलक करें, अक्षात लगायें, माला पहनाये, वस्त्र आदि दे कर संकल्प करें – अपना नाम, गोत्र आदि उच्चारण करते हुए। कहें कि मैं संकल्प करता हूँ कि रुद्राभिषेक हेतु रुद्राष्टाध्यायी का पाठ करने के लिये (पुरोहित नाम, गोत्र आदि उच्चारण करते हुए) इन ब्राह्मण (पुरोहित) का वरण कर रहा हूँ। इसके बाद ब्राह्मण के हाथ में रक्षा बन्धन (मौलि) बाँध दें।

रुद्राभिषेक :- तत्पश्चात् दुग्ध, गंगाजल एवं शुद्ध जल लेकर बाणलिंग (नर्मदेश्वर) अथवा मनोकामना अनुसार जो भी शिवलिंग स्वीकृत किया गया हैं उस पर सतत धारा से अभिषेक करें। इसके लिये श्रृंगी द्वारा, छिद्रवाला कलश रस्सी से लटका कर अथवा तिपाही पर रख अभिषेक किया जा सकता हैं। यह ध्यान रहे कि दुग्ध जलादि की धारा टूटे नहीं। श्रृंगी के पकड़ने में अगर पुरुष का हाथ थक जाये तो पत्नी श्रृंगी पकड़ ले। इस तरह श्रृंगी बदली जा सकती हैं। एक व्यक्ति श्रृंगी को पकड़े रहे दूसरा उस पर दुग्ध जलादि भरता रहे। श्रृंगी के रुकने पर जब तक उस को साफ किया जाये दूसरा व्यक्ति गिलास से ही अभिषेक करता रहे।

अभिषेक कर्ता का ध्यान भगवान शिव पर लगा रहे तथा मुहँ से लगातार 'ॐ नमः शिवाय' की ध्वनि निकलती रहे।

आचार्य (पुरोहित) रुद्राष्टाध्यायी का उच्च स्वर से पाठ करते रहें। ध्यान रहे मन बड़ा चंचल है वह भटके नहीं।

रुद्राष्टाध्यायी के मन्त्रों के समाप्त होने तक यही क्रम चलता रहे। यह रुद्राभिषेक श्रद्धा एवं विश्वास के साथ शुद्ध मन से किया गया तो आपकी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होंगी।

अभिषेक प्रारम्भ करने से पूर्व अभिषेक करने का अधिकार प्राप्त करने हेतु 'ॐ मनो जूतिरत्यादि षडभिः' मन्त्रों द्वारा षडंग न्यास कर लेना चाहिए।

रुद्राष्टाध्यायी का पाठ समाप्त होने के बाद भगवान शिव का उत्तर पूजन होगा जिसकी संक्षिप्त विधि इस प्रकार हैं।

उत्तर पूजन :-

यजमान अथवा अभिषेककर्त्ता अपना नाम, गोत्र आदि उच्चारण करके कहे कि मैं 'श्री साम्बसदाशिव के अभिषेक कर्म का सम्पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए श्री साम्बसदाशिव का उत्तर पूजन करने का संकल्प कर रहा हूँ।

पायां समर्पयामि, अर्ध्य समर्पयामि, आचमनीय समर्पयामि, स्नानं समर्पयामि, पंचामृत स्नानं समर्पयामि, शुद्धो दकस्नानं समर्पयामि, वस्त्र उपवस्त्र समर्पयामि, यज्ञोपवीतं समर्पयामि, गन्धं समर्पयामि, अक्षत समर्पयामि, पुष्पमालां समर्पयामि, सुगन्धित द्रव्य समर्पयामि, बिल्व पत्रं समर्पयामि, नाना परिमल द्रव्यं समर्पयामि, धूपंसमर्पयामि, दीपं समर्पयामि, नैवेद्यं समर्पयामि, ताम्बूलपूंगी फलं समर्पयामि, ऋतुफलं समर्पयामि, दक्षिणा द्रव्यं समर्पयामि आदि उच्चारण करते हुए पुनः भगवान शिव का पूजन करें।

आरती — इस समय घृत के दीपक से आरती करें।

जय शिव ओंकारा, हर शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अद्धांगी धारा।। (पूरी आरती बोलें)

स्तुति (पुष्पाञ्जलि) :— ॐ यज्ञेन यज्ञ भय जन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।
(यजु० ३१/१६)

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् कामकामाय मह्यम् कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।। (ऋग्वेद सूक्त)

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यंमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्सार्वभौमः सार्वायुषऽआन्तादापरार्धात्पृथ्व्यै समुद्रपर्यन्ताया ऽएकराडिति।
तदप्येषश्लोकाऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्गृहे।
आविक्षितस्य कामप्रेर्व्विश्वेदेवाः सभासद इति।। (ऋग्वेद सूक्त)

ॐ व्विश्वतश्चक्षुरुत व्विश्वतो मुखो व्विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यातामूमी जनयन्देवऽएकः।। (यजु० १७/१६)

तत्पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र से गाल बजाते हुए बम् बम् बोल कर जलहरी का जल लगायें।

निरावलम्बस्य ममावलम्बं विपाटिताशेष विपत्कदम्बम्।
मदीय पापा चलपातशाम्बं प्रवर्ततां वाचि सदैव बम् बम्।।

पंचाग प्रणाम :– मन में स्मरण, नेत्रों से दर्शन, दोनों हाथ जोड़कर और वाणी से नामोच्चारण करते हुए मस्तक झुका कर प्रणाम करें।

प्रदक्षिणा – (अर्धप्रदक्षिणा करें)

यानि कानि च पापानि ज्ञाना ज्ञान कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणे पदे पदे।।

ब्राह्मण दक्षिणा एवं ब्राह्मण भोजन संकल्प :- यजमान के हाथ में जल, अक्षत एवं दक्षिणा रखकर उसका नाम, गोत्र उच्चारण कराते हुए रुद्राभिषेक पूर्ण फल प्राप्ति हेतु, अनुष्ठान में कम अधिक दोष निवारण हेतु तथा ब्राह्मण भोजन हेतु ब्राह्मण, आचार्य आदि के नाम गोत्रादि का उच्चारण कराते हुए संकल्प कराना चाहिये।

क्षमापनम् :—

आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।।१।।
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात्कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वर।।२।।
भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम्।
त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं मम।।३।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव प्रसीद परमेश्वर।।४।।
यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्व क्षम्यतां देव ! प्रसीद परमेश्वर।।५।।
अज्ञानाद् विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्व क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।६।।
कर्मणा मनसा वाचा पूजनं यन्मया कृतम्।
तेन तुष्टिं समासाद्य प्रसीद परमेश्वर।।७।।
अपराधसहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निश मया।
दासोऽममिति मां मत्वा क्षमस्त परमेश्वर।।८।।

मत्समो नास्ति पापिष्ठस्त्वत्समों नास्ति पापहा।
इति मत्त्वा दयासिन्धो ! यथेच्छसि तथा कुरु।।९।।
गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्रयमेव च।
आगता सुखसम्पत्तिः पुण्योऽहं तव पूजनात्।।१०।।
पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पापसम्भवः।
पाहि मां सर्वदा देव सर्वपापहरो भव।।११।।
(पूजन एवं रुद्राभिषेक में हुई त्रुटि के लिये क्षमा मांगे)

यजमान अभिषेक :- शान्तिमन्त्र (यजु० ३६/१७)
ॐ आपो हिष्ठा मदोभुवस्ता ने अर्जे दधातन। महे रराायाय चक्षसे।।१।।
ॐ यो व० शिव तमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव़मातरः।।२।।
ॐ तस्मा अरं गमाय वो यस्य क्षयाय जिन्वथ।
आपो जन यथाः च न।।३।। (यजु० ११/५०–५२)
ॐ यतो–यतः समीह से ततो नो अभयं कुरु।
शं नः कुरु प्रणाभ्योऽभयं नः पशुम्यः।।४।। (यजु० ३६/२२)
ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यदभद्रं तन्न आ सुव।।५।।
(यजु० ३०/३)

(इन मन्त्रों से पुरोहित यजमान का अभिषेक करेंगे)
विसर्जनम् यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकाम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।।१।।
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन।।२।।
प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यतेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः।।३।।
यस्य स्मृत्या च नमोकृत्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।४।।

बाणलिंग (नर्मदेश्वर) शिवलिंग को छोड़ कर शेष अभिषिक्त सामग्री का विसर्जन किसी नदी अथवा पवित्र स्थल में करें।

आशीर्वाद :-

ॐ पुनस्त्वाऽऽदित्यास रुद्रा वसवः समिन्धतां पुन ब्राह्मणों वसुनीथ यज्ञैः।
घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।।१।।
(यजु० १२/४४)
ॐ दीर्घायुस्त ओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्।
अयो त्वं दीर्धायु भूत्व शत वल्शा विरोहतात्।।२।। (यजु० १२/१००)
ॐ विवस्वन्नदित्यैष ते सोमपीथस्तस्मिन् मत्स्त।
श्रदस्मै नरो वचसे दधातन यदा शीर्दा दम्पती वामश्नुत।
पुमान् पुत्रों जायते विन्दते वस्वधा विश्वाहारप एधते गृहे।।३।।
(यजु० ८/५)
श्री र्वचस्वमायुष्य मारोग्यमाविधाच्छो ममनं महीयते।
धनं धान्यं पशुं बहु पुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः।।४।।
मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णः सन्तु मनोस्थाः।
शत्रुणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणांमुदयस्तव।।५।।

ॐ नमः शिवाय

श्री शिव जी की आरती

जय शिव ओंकारा, हर शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, अर्द्धांगीधारा।।
एकानन चतुरानन, पञ्चानन् राजे।
हंसासन गरुडासन, वृषवाहन साजे।।
दो भुज चारु चतुर्भुज, दशभुज ते सोहे।
तीनों रुप निरखते, त्रिभुवन जन मोहे।।
अक्षमाला वनमाला, रुण्डमाला धारी।
चन्दन मृगमद चंदा, भाले शुभ कारी।।
श्वेताम्बर पीताम्बरं बाघम्बर अंगे।
सनकादिक ब्रह्मादिक, भूतादिक संगे।।
कर मध्ये कमण्डल, चक्र त्रिशुल धर्ता।
जग–कर्ता जग–हर्ता, जग–पालन–कर्ता।।
लक्ष्मी वर सावित्री, श्री पार्वती संगे।
अर्धांगिनी गायत्री, सिर सोहत गंगे।।
काशी में विश्वनाथ विराजे, नन्दो ब्रह्मचारी।
नित उठ भोग लगावें, महिमा अति भारी।।
ब्रह्म विष्णु सदा शिव, जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये, ये तीनों एका।।
त्रिगुण स्वामी जी की आरती, जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी, मन वांछित फल पावे।।

— इति —

अथ श्री शंकर - स्तुति

शीश गंग अर्द्धांग पार्वती सदा विराजत कैलासी।
नन्दी भृंगी नृत्य करत हैं गुण भक्तन शिव की दासी।।१।।
शीतल मंद सुगंध पवन बहे बैठे है शिव अविनासी।
करत गान गंधर्व सप्त स्वर राग रागनी अति गासी।।२।।
यक्ष भैरव जहं बोलत डोलत है बन के बासी।
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर, भंवर करत है गुंजांसी।।३।।
कल्प द्रुम अरु पारिजत तरु बाग रहे है लक्षांसी।
कामधेनु कोटिक जहं डोलत करत फिरत है भिक्षांसी।।४।।
सूर्य कांत सम पर्वत शोभित चन्द्रकांत भव के वासी।
छहों ऋतु नित फलत रहत है पुष्प चढ़त है वर्षा सी।।५।।
देव मुनि जन की भीड़ पड़त है निगम रहत जो नित गासी।
ब्रह्मा विष्णु जाको ध्यान धरत है कुछ शिव हमको फरमासी ।।६।।
ऋद्धि सिद्धि के दाता शंकर सदा आनन्दित सुखरासी।
जिसका सुमिरन सेवा करत टूट जाय यम की फांसी।।७।।
त्रिशुल धर को ध्यान निरन्तर मन लगायकर जो गासी।
दूर करोविपदा शिव तनकी जन्म–जन्म शिव पद पासी।।८।।
कैलासी काशी के वासी अविनासी मेरी सुध लीज्यो।
सेवक जान सदा चरनन को अपनो जान दरस दीज्यो।।९।।
तुम तो प्रभु जी सदा सयाने अवगुन मेरा सब ढ़कियो।
सब अपराध क्षमा कर शंकर किंकर की विनती सुनियो।

— इति —

अथ-रुद्राष्टकम्

नमामीशमीशान निर्वाणरुपं।
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरुपं।।

निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं।
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं।।

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं।
गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं।।

करालं महाकाल कालं कृपालं।
गुणागार संसारपारं नतोऽह।।

तुषाराद्रि संकाश गौर गभीरं।
मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं।।

स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा।
लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा।।

चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं।
प्रसन्नाननं नीलकठं दयालं।।

मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं।
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजांमि।।

प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं।
अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाश।।

त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं।
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं।।

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी।
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी।।

चिदानंद संदोह मोहापहारी।
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी।।
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं।
भजंतीह लोके परे वा नराणां।।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं।
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं।।
न जानामि योगं जपं नैव पूजां।
नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं।।
जरा जन्म दुःखौध तातप्यमानं।
प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो।।
रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्तया तेषां शम्भु प्रसीदति।।
— इति —

क्षमाप्रार्थना

करणचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवण नयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो।।१।।
आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम्।
पूजां चैव न जानामि न जानामि क्षमस्व परमेश्वरः।।२।।
अपराधसहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरः।।३।।

श्रीशिवपंचाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय
भस्मांगरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै "न" काराय नमः शिवाय ।।१।।

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय
नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय
तस्मै "म" काराय नमः शिवाय ।।२।।

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द –
सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय
तस्मै "शि" काराय नमः शिवाय ।।३।।

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य –
मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय
तस्मै "व" काराय नमः शिवाय ।।४।।

यक्षस्वरुपाय जटाधराय
पिनाकहस्ताय सनातनाय ।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय
तस्मै "य" काराय नमः शिवाय ।।५।।

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ।।६।।

श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

— इति —

विशेष लाभकरीमन्त्र

प्रणवमन्त्र - ॐ

"प्र–प्रकर्षेण, न–नयेत, वः युष्मान् मोक्षं इति वा प्रणवः" अर्थात् यह तुम सब उपासकों को बलपूर्वक मोक्ष तक पहुँचा देगा। इस अभिप्राय से इसे ऋषि मुनि प्रणव कहते हैं।

प्रणव के दो भेद हैं। एक स्थूल और दूसरा सूक्ष्म। एक अक्षर जो "ॐ" है वह सूक्ष्म प्रणव है तथा "नमः शिवायः" यह पाँच अक्षर वाला मन्त्र स्थूल प्रणव हैं। यह मन्त्र शिव का हीं स्वरुप है तथा शिव भक्ति का बोधक हैं। इस प्रणव "ॐ" का प्रयोग वेद मन्त्रों के आदि में भी किया जाता है। जो सदा शिव के उपासक हैं और उनका चित्त प्रणव उपासना में संलग्न हैं उन्हें परम पद की प्राप्ति हो जाती हैं।

पञ्चाक्षर मन्त्र (नमः शिवाय) :- इस मन्त्र में पाँच अक्षर है जो स्वयं भगवान शिव के पाँच मुखों से निकले हैं। पञ्चाक्षर मन्त्र अल्पाक्षर हैं। इसमें अनेक अर्थ भरे हैं वेद का सार, मुक्ति का देने वाला, असन्दिग्ध ा, अनेक सिद्धि देने वाला, सुख से उच्चारण करने योग्य, समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला, सब विद्याओं का बीज, सब मन्त्रों में आदि, वट–बीज की भाँति बहुत विस्तार युक्त और परमेश्वर का वाक्य पञ्चाक्षर ही हैं। इसके आदि में प्रणव लगा देने से यह षडक्षर हो जाता हैं। **"ॐ नमः शिवाय"**

पञ्चाक्षर तथा षडक्षर मन्त्र में वाच्य–वाचक–भाव के द्वारा शिव स्थित हैं। शिव वाच्य है और मन्त्र वाचक है, यह वाच्य–वाचक–भाव अनादिसिद्ध हैं। जिस पुरुष के हृदय में पञ्चाक्षर मन्त्र विद्यमान है, उसने मानो सब शास्त्र और वेद पढ़ लिये, क्योंकि शिव ही ज्ञान हैं, वहीं परमपद हैं। इसलिये नित्य पञ्चाक्षर मन्त्र का जप करना चाहिये। पञ्चाक्षर भगवान् शिव जी का हृदय, गुहय से भी गुहय और मोक्ष ज्ञान का सबसे उत्तम साधन है।

मृत्युञ्जय मन्त्र -

ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुव स्वः
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्
ॐ स्वः भुवः भूः, ॐ सः जूँ हौं ॐ।।

भोजन ग्रहण मन्त्र :-

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु।
सह वीर्य करवावहैं। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।
ॐ शान्तिः। शान्तिः।। शान्तिः।।।

गायत्री मन्त्र -

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि।
धियो योः न प्रचोदयात्।।

रुद्रगायत्री मन्त्र :-

ॐ तत्पुरुषाय विदम्हे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।

शान्ति मन्त्र :-

ॐ द्यौः शन्तिरन्तरिक्षेः, शान्तिः पृथिवी, शान्तिरापः, शान्ति रोषधयः,
शान्ति वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः, शान्तिर्ब्रहम, शान्तिसर्वथ
शान्तिः शान्तिरेव, शान्ति सामा शान्ति रेधि।। ॐ शान्तिः। ॐ
शान्तिः।। ॐ शान्तिः।।।

चन्दन धारण मन्त्र :-

चन्दनस्य महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशंनम्।
आपदं हरते नित्यं लक्ष्मी तिष्ठति सर्वदा।।

यज्ञोपवीत धारण मन्त्र :-

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजा पतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्यं प्रति मुचं शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

आसन पवित्रकरण मन्त्र :-

ॐ पृथ्वी ! त्वया धृता लोकादिवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु चासनम्।।

प्रदक्षिणा मन्त्र :-

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि तानि प्रणश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे।।

ब्राह्मण रक्षा बन्धन मन्त्र :-

ॐ व्रतेन दीक्षमाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति, श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

ब्राह्मण तिलक मन्त्र :-

ॐ नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्रह्मण हिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।

यजमान-रक्षाबन्धन-मन्त्र :-

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेनत्वामनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।

यजमान तिलकमन्त्र :-

शतमानं भवति शतायुवै पुरुषः
शतेन्द्रिय आयुरेवेन्द्रियं वीर्यमात्मन् धते।।

ध्यान रखने योग्य बातें :-

(१) विष्णु को चावल, गणेश को तुलसी, दुर्गा को दूर्वा और सूर्यनारायण को बिल्व पत्र नहीं चढ़ावें।

(२) धोती में रखा हुआ और जल मे डुबोया हुआ पुष्प निर्माल्य हो जाता है इसलिये देवता उसे ग्रहण नहीं करते ।

(३) शिव जी को कुन्द, विष्णु को धतूरा, देवी को आक तथा मदार और सूर्य को तगर का पुष्प नहीं चढ़ावे।

(४) तुलसी की मंजरी से भगवान विष्णु एवं शिव की पूजा करने पर अवश्य मुक्ति प्राप्त होती हैं।

(५) पत्र, पुष्प तथा फल का मुख नीचे कर के नहीं चढ़ावें। वे जैसे उत्पन्न होते हैं वैसे ही चढ़ाना चाहिये। किन्तु बिल्व पत्र उल्टा कर के चढ़ाये।

(६) पान की डंडी से व्याधि और अग्र भाग से पाप होता हैं। अतः डंडी, अग्रभाग और शिरा निकाल देना चाहिये।

(७) संक्रान्ति, द्वादशी, अमावस्या, पूर्णिमा, रविवार और सन्ध्या के समय तुलसी तोड़ना निषिद्ध हैं। यदि विशेष आवश्यक हो तो नीचे लिखे मन्त्र से तोड़ सकते हैं।

त्वद्गंसम्भवेन त्वां पूजयामि यथाहरिम्।
तथा नाशाय विघ्नं मे ततो यान्ति परांगतिम्।।

(८) पूजा में पूर्वाभिमुख बैठें। धूप एवं घंटा बाँयी और रखे तथा शंख जलपात्र एवं पूजन सामग्री दाहिनी ओर रखें।

(९) घृत का दीपक बाँयी ओर तथा तेल का दीपक दाहिनी ओर रखें।

(१०) मूर्ति में अथवा बाणलिंग (नर्मदेश्वर) में आवाहन एवं विसर्जन नहीं किया जाता हैं।

(११) गणेश जी अगर सुपारी पर मौली लपेट कर बनाए गये हैं तो चावलों से आवाहन करें। अगर मूर्ति है तो पुष्प छोड़े।

(१२) रंक्षाबन्धन कभी खाली हाथ न बँधवायें। मुठ्ठी मे दक्षिणा रखें अथवा पुष्प अवश्य ले लें। ब्राह्मण को भी रक्षा बन्धन बाँधते समय दक्षिणा अवश्य दे दें।

(१३) चरणामृत ग्रहण करते समय ध्यान रखें चरणामृत पृथ्ती पर न गिरें।

(१४) पूजन सामग्री श्रद्धा एवं सामर्थ्य अनुसार होनी चाहिये क्योंकि आशुतोष भगवान तो केवल जल अभिषेक से भी प्रसन्न हो जाते हैं।

(१५) अक्षत को केसर या रोली से हल्का रंग लेना चाहिये।

(१६) संकल्प करते समय–दाहिने हाथ में पुष्प, अक्षत, जल तथा द्रव्य रख लेना चाहिये।

(१७) जलहरी में सर्प का आकार हो तो सर्प का पूजन कर लेना चाहिये।

(१८) शिव का ध्यान करते हुए हाथ में बिल्व पत्र एवं अक्षत (चावल) ले लेना चाहिये।

पूजन सामग्री :- सुपारी, लोंग, इलायची, रौली, मौली, सिंदूर, धूप बत्ती, अग्रबर्त्ती, कपूर, रुई, शुद्ध जल, पुष्प, पुष्पमाला, आक, धतूरा, भांग, बिल्व पत्र, तुलसी मंजरी, शमी पत्र, दूर्वा, पान, अक्षत (चावल), भस्म, दूध, दही, घी, शहद, चीनी, पंचामृत, केसर, चन्दन, वस्त्र, उपवस्त्र, यज्ञोपवीत, सुगन्धित द्रव्य, आभूषण, परिमल द्रव्य, नैवेद्य, ऋतु फल, श्रीफल, दक्षिणा, कलश, पूर्ण पात्र, लाल वस्त्र (श्री फल हेतू), शंकर भगवान के वस्त्र, पुरोहित के वस्त्र, दीपक, माचिस, अबीर, गुलाल, अभ्रक, प्रसाद आदि।

रुद्राभिषेक हेतु सामग्री :- शिवलिंग, श्रृंगी, रुद्राष्टाध्यायी पुस्तक, लोटा, बाल्टी, शुद्ध जल, गंगा जल, दूध आदि।

ॐ नमः शिवाय्

द्वादशज्योतिर्लिगांनि

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिनां महाकालमोङ्कारममलेश्वरम्।।१।।
परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारूकावने।।२।।
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे।
हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये।।३।।
एतानि ज्योतिर्लिगांनि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति।।४।।

१ श्रीसोमनाथ :-

यह ज्योतिर्लिग सोमनाथ नामक विश्व प्रसिद्ध मन्दिर में स्थापित हैं। यह मन्दिर गुजरात प्रान्त के काठियावाड़ क्षेत्र में समुद्र के किनारे स्थित हैं। यहीं भगवान् श्रीकृष्ण ने जरा नामकं व्याध के बाण को निमित्त बना कर अपनी लीला का संवरण किया था।

पावन प्रभास क्षेत्र में स्थित इस सोमनाथ–ज्योतिर्लिगं की महिमा महाभारत, श्रीमद्भागवत् तथा स्कन्दपुराणादि में विस्तार से बतायी गयी हैं। चन्द्रमा का एक नाम सोम भी हैं, उन्होनें भगवान् शिव को अपना नाथ–स्वामी मान कर यहाँ तपस्या की थी। अतः इस ज्योतिर्लिगं को सोमनाथ कहा जाता हैं। इसके दर्शन, पूजन, आराधना से भक्तों के जन्म–जन्मान्तर के सारे पातक और दुष्कृत्य विनष्ट हो जाते हैं। वे भगवान् शिव और माता पार्वती की अक्षय कृपा का पात्र बन जाते हैं। मोक्ष का मार्ग उनके लिये सहज ही सुलभ हो जाता हैं। उनके लौकिक–पारलौकिक सारे कृत्य स्वयमेव, अनायास सफल हो जाते हैं।

२ श्रीमल्लिकार्जुन

यह ज्योतिर्लिगं आन्ध्रप्रदेश में कृष्णा नदी के तट पर श्री शैल पर्वत पर स्थित हैं। इस पर्वत को दक्षिण का कैलास कहा जाता हैं। इस मल्लिकार्जुन–शिवलिंग और तीर्थ क्षेत्र की पुराणों में अत्यधिक महिमा बतायी गयी हैं। यहाँ आ कर शिवलिंग का दर्शन–पूजन–अर्चन करने वाले भक्तों की सभी सात्त्विक मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं। उनकी भगवान् शिव के चरणों में स्थिर प्रीति हो जाती है। दैहिक, दैविक, भौतिक सभी प्रकार की बाधाओं से वे मुक्त हो जाते हैं। भगवान् शिव की भक्ति मनुष्य को मोक्ष के मार्ग पर ले जाने वाली हैं।

३ श्रीमहाकालेश्वर

यह परम पवित्र ज्योतिर्लिगं मध्य प्रदेश के उज्जैन नगर में हैं। पुण्यसलिला क्षिप्रा–शिप्रा–नदी के तट पर अवस्थित यह उज्जैन प्राचीन काल में उज्जयिनी के नाम से विख्यात था। इसे अवन्तिकापुरी भी कहते थे। यह भारत की परम पवित्र सप्त पुरियों में से एक हैं।

किसी समय अवन्तिकापुरी (उज्जयिनी) में वेदपाठी तपोनिष्ठ एक अत्यन्त तेजस्वी ब्राह्मण रहते थे। एक दिन दूषण नामक एक अत्याचारी असुर उनकी तपस्या में विध्न डालने के लिये वहाँ आया। ब्रह्मा जी के वरसे वह शक्तिशाली हो गया था। उसके अत्याचार से चारों ओर त्राहि–त्राहि मची हुई थी। ब्राह्मण को कष्ट में पड़ा देख कर प्राणि मात्र का कल्याण करने वाले भगवान् शंकर वहाँ प्रकट हो गये। उन्होनें एक हुंकार मात्र से उस दारुण अत्याचारी दानव को वहीं जलाकर भस्म कर दिया। भगवान् वहाँ हुंकार सहित प्रकट हुए इसलिये उनका नाम महाकाल पड़ गया। इसीलिए इस परम पवित्र ज्योतिर्लिग को महाकाल के नाम से जाना जाता हैं।

महाभारत, शिवपुराण एवं स्कन्द पुराण में इस ज्योतिर्लिगं की महिमा का पूरे विस्तार के साथ वर्णन किया गया हैं।

४ श्रीओंकारेश्वर, श्रीअमलेश्वर

यह ज्योतिर्लिगं मध्य प्रदेश में पवित्र नर्मदा नदी के तट पर अवस्थित हैं। इस स्थान पर नर्मदा के दो धाराओं में विभक्त हो जाने से बीच में एक टापू–सा बन गया हैं। इस टापू को मान्धाता–पर्वत या शिवपुरी कहते हैं। इस ज्योतिर्लिगं–मन्दिर के भीतर दो कोठरियों से हो कर जाना पड़ता हैं। भीतर अंधेरा रहने के कारण यहाँ निरन्तर प्रकाश जलता रहता हैं। ओंकारेश्वर मनुष्य निर्मित नहीं हैं। स्वयं प्रकृति ने इसका निर्माण किया हैं। इसके चारों ओर हमेश जल भरा रहता हैं। सम्पूर्ण मान्धाता–पर्वत ही भगवान् शिव का रुप माना जाता है। इस ओंकारेश्वर–ज्योतिर्लिगं के दो स्वरुप है। एक को अमलेश्वर के नाम से जाना जाता हैं। यह नर्मदा के दक्षिण तट पर ओंकारेश्वर से थोड़ी दूर हट कर हैं। पृथक् होते हुए भी दोनों की गणना एक हीं में की जाती हैं।

५ श्रीकेदारनाथ

पुराणों एवं शास्त्रों में श्री केदारनाथ ज्योतिर्लिगं की महिमा का वर्णन बारम्बार किया गया हैं। यह ज्योतिर्लिगं पर्वतराज हिमालय की केदार नामक चोटी पर अवस्थित है। यहाँ की प्राकृतिक शोभा देखते ही बनती है। इस चोटी के पश्चिम भाग में पुण्यमती मन्दाकिनी नदी के तट पर स्थित केदारेश्वर महादेव का मन्दिर अपने स्वरुप से ही हमें धर्म और अध्यात्म की ओर बढ़ने का सन्देश देता हैं। चोटी के पूर्व में अलकनन्दा के सुरम्य तट पर बदरीनाथ का परम प्रसिद्ध मन्दिर है। इस ज्योतिर्लिगं के दर्शन–पूजन तथा यहाँ स्नान करने से भक्तों को लौकिक फलों की प्राप्ति होने के साथ–साथ अचल शिव भक्ति तथा मोक्ष की प्राप्ति भी हो जाती है।

६ श्रीभीमेश्वर

यह ज्योतिर्लिगं गोहाटी के पास ब्रह्मपुर पहाड़ी पर अवस्थित हैं। इस ज्योतिर्लिगं की स्थापना विषय में शिव पुराण में यह कथा

दी गयी है कि राक्षस भीम के बन्दीगृह में पड़े हुए राजा सुदक्षिण ने भगवान् शिव का ध्यान किया। वे अपने सामने पार्थिव शिवलिंग रख कर अर्चना कर रहे थे। उन्हें ऐसा करते देख क्रोधोन्मत्त हो कर राक्षस भीम ने अपनी तलवार से उस पार्थिव शिवलिंग पर प्रहार किया मिन्तु उसकी तलवार का स्पर्श उस लिंग से हो भी नहीं पाया कि भीतर से साक्षात् भूतभावन शंकर जी वहाँ प्रकट हो गये। उन्होनें अपनी हुंकार मात्र से उस राक्षस को वहीं जला कर भस्म कर दिया। इस ज्योतिर्लिगं की महिमा अमोघ हैं। इसके दर्शन का फल कभी व्यर्थ नहीं जाता। भक्तों की सभी मनोकामनाएँ यहाँ आकर पूर्ण हो जाती हैं।

७ श्रीविश्वेश्वर

यह ज्योतिर्लिगं उत्तर भारत की प्रसिद्ध नगरी काशी में स्थित हैं। इस नगरी का प्रलय काल में भी लोप नहीं होता। उस समय भगवान् अपनी वास भूमि इस पवित्र नगरी को अपने त्रिशूल पर धारण कर लेते हैं और सृष्टिकाल आने पर पुनः यथा स्थान रख देते हैं। सृष्टि की आदि स्थली भी इसी नगरी को बताया जाता हैं। भगवान् विष्णु ने इसी स्थान पर सृष्टि–कामना से तपस्या कर के भगवान शंकर को प्रसन्न किया था। अगस्त मुनि ने भी इस स्थान पर अपनी तपस्या द्वारा भगवान् शिव को सन्तुष्ट किया था। इस पवित्र नगरी की महिमा ऐसी है कि यहाँ जो भी प्राणी अपने प्राण त्याग करता हैं, उसे मोक्ष प्राप्ति होती है।

८ श्रीत्र्यम्बकेश्वर

यह ज्योतिर्लिगं महाराष्ट्र प्रान्त में नासिक से ३० किलोमीटर पश्चिम में अवस्थित हैं। इस ज्योतिर्लिगं की स्थापना के विषय में शिव पुराण में कथा आती हैं कि एक बार ब्राह्मणों ने छल से महर्षि गौतम पर गौ हत्या का दोष लगा दिया। इस दोष निवारण हेतु महर्षि गौतम जी ने इस स्थान पर भगवान् शिव की आराधना की। आशुतोष

भगवान् शिव ने प्रसन्न हो कर साक्षात् दर्शन दिये तथा कहा "गौतम ! तुम सदैव, सर्वथा निष्पाप हो"। इसी स्थान पर गौतम ऋषि जी द्वारा लायी गई गंगा जी भी गोदावरी नाम से वहीं प्रवाहित होने लगी। यह ज्योतिर्लिगं समस्त पुण्यों का प्रदान करने वाला हैं।

९ श्रीवैद्यनाथ

यह ज्योतिर्लिगं बिहार प्रान्त के सन्थाल परगनें में स्थित है। शास्त्र और लोक दोनों में इसकी बड़ी प्रसिद्धि है। इसकी महिमा का वर्णन भूरशिः किया गया है। यह वैद्यनाथ–ज्योतिर्लिगं अनन्त फलों को देने वाला है। यह ग्यारह अंगुल ऊँचा है। इसके ऊपर अँगूठे के आकार का गढ़ा है। कहा जाता है कि यह वही निशान है जिसे रावण ने अपने अँगूठे से बनाया था। यहाँ दूर–दूर से तीर्थो का जल ला कर चढ़ाने का विधान है। रोग–मुक्ति के लिये भी इस ज्योतिर्लिगं की महिमा बहुत प्रसिद्ध है। पुराणों में बताया गया है कि जो मनुष्य इस ज्योतिर्लिगं का दर्शन करता है, उसे अपने समस्त पापों से छुटकारा मिल जाता हैं। उस पर भगवान् शिव की कृपा सदा बनी रहती हैं।

१० श्रीनागेश्वर

भगवान शिव का यह प्रसिद्ध ज्योतिर्लिगं गुजरात प्रान्त में द्वारकापुरी से लगभग १७ मील की दूरी पर स्थित हैं। इसके बारे में पुराणों में कथा मिलती है कि सुप्रिय नामक धर्मात्मा, सदाचारी शिव भक्त को दारुक नाम के एक राक्षस ने उसकी शिव भक्ति से रुष्ट हो कर अपने कारागार में बन्द कर दिया। शिव भक्त ने वहाँ भी भगवान् की भक्ति नहीं छोड़ी बल्कि समाधि लगा कर बैठ गया। राक्षस ने उसे मारने का आदेश दे दिया। अपने भक्त की रक्षा हेतु भगवान् शिव एक चमकते हुए सिहांसन पर ज्योतिर्लिगं के रुप में प्रकट हो गये जो नागेश्वर के नाम से जाने जाते हैं। इस पवित्र ज्योतिर्लिगं के दर्शन की शास्त्रों में बड़ी महिमा बताई गई हैं कहा

गया है कि जो श्रद्धापूर्वक इसकी उत्पत्ति और महात्म्य की कथा सुनेगा वह सारे पापों से छुटकारा पाकर समस्त सुखों का भोग करता हुआ अन्त में भगवान शिव के परम पवित्र दिव्य धाम को प्राप्त होगा।

११ श्रीसेतुबन्ध रामेश्वर

इस ज्योतिर्लिगं की स्थापना मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री रामचन्द्र जी ने की थी। इसके विषय में यह कथा कही जाती है – जब भगवान् श्री रामचन्द्र जी लंका पर चढ़ाई करने के लिये जा रहे थे तब इसी स्थान पर उन्होनें समुद्रतट की बालुका से शिवलिंग बना कर उसका पूजन किया था। तथा भगवान् शिव से रावण पर विजय प्राप्त करने का वर माँगा था। उन्होनें प्रसन्नता के साथ यह वर भगवान श्री राम को दे दिया। भगवान् शिव ने लोक–कल्याणार्थ ज्योतिर्लिगं के रुप में वहाँ निवास करने की सबकी प्रार्थना भी स्वीकार कर ली। तभी से यह ज्योतिर्लिगं यहाँ विराजमान हैं। तथा गंगाजल से इसका अभिषेक करने का बड़ा महात्म्य हैं।

१२ श्रीघुश्मेश्वर

द्वादश ज्योतिर्लिगो में यह अन्तिम ज्योतिर्लिगं हैं। इसे घुश्मेश्वर, घुसृणेश्वर या घृष्णेश्वर भी कहा जाता हैं। यह महाराष्ट्र प्रदेश में दौलताबाद से बारह मील दूर वेरुल गाँव के पास अवस्थित हैं। सती शिवभक्ता घुश्मा के आराध्य होने के कारण भगवान् शिव यहाँ घुश्मेश्वर महादेव के नाम से विख्यात हुए। घुश्मेश्वर–ज्योतिर्लिगं की महिमा पुराणों में बहुत विस्तार से वर्णित की गयी है। इनका दर्शन लोक–परलोक दोनों के लिये अमोघ फलदायी हैं।

ॐ नमः शिवाय्

परशुरामेश्वर मन्दिर का संक्षिप्त इतिहास

आज जहाँ पर पुरेश्वर मन्दिर (पुरा महादेव) हैं, काफी पहले यहाँ पर कजरी वन था। इसी वन में जमदग्नि ऋषि अपनी पत्नी रेणुका सहित अपने आश्रम में रहते थे। रेणुका प्रतिदिन कच्चा घड़ा बना कर नदी से (जिसे पुराणों में पंचतीर्थी कहा गया है और आज हिन्डन (हरनन्दी) के नाम से विख्यात है) जल भर कर लाती थी। वह जल शिव को अर्पण किया जाता था।

एक बार राजा सहस्त्र बाहु शिकार खेलता हुआ उस आश्रम में पहुँचा। ऋषि की अनुपस्थिति में रेणुका ने "कामधेनु" गाय की कृपा से राजा का पूर्ण आदर सत्कार किया। राजा उस अद्‌भुत गाय को बलपूर्वक वहाँ से ले जाना चाहता था। परन्तु वह ऐसा करने में सफल नहीं हो सका। अन्त में राजा गुस्से में रेणुका को ही बलपूर्वक अपने साथ हस्तिनापुर अपने महल में ले गया तथा कमरे में बन्द कर दिया। रानी ने अवसर पाते ही अपनी छोटी बहन रेणुका को मुक्त कर दिया।

रेणुका ने वापिस आकर सारा वृतान्त ऋषि को कह सुनाया, परन्तु भाग्य की विडम्बना देखिये कि ऋषि ने एक रात्रि दूसरे पुरुष के महल में रहने के कारण रेणुका को ही आश्रम छोड़ने का आदेश दे दिया। रेणुका ने अपने पति से बार–बार प्रार्थना की कि वह पूर्णतया पवित्र है तथा वह आश्रम छोड़ कर नहीं जायेगी। अगर उन्हें विश्वास नहीं तो वे अपने हाथों से उसे मार दें। जिससे पति के हाथों मर कर वह मोक्ष को प्राप्त हो जाए। परन्तु ऋषि अपने आदेश पर अडिग रहे।

तत्पश्चात् ऋषि ने अपने तीन पुत्रों को उनकी माता का सिर धड़ से अलग करने को कहा लेकिन उनके पुत्रों ने मना कर दिया। चौथे पुंत्र परशुराम ने "पितृ आज्ञा" को अपना धर्म मानते हुए अपनी माता का सिर धड़ से अलग कर दिया। तुलसीदास जी ने भी रामचरितमानस में लिखा हैं :–

"परसुराम पितु–आग्या राखी।
मारी मातु लोकसब साखी"

बाद में परशुराम जी को इस का घोर पश्चाताप हुआ। उन्होनें थोड़ी दूर पर ही घोर तपस्या करनी आरम्भ कर दी तथा वहाँ पर शिवलिंग स्थापित कर उसकी पूजा करने लगे। उनकी तपस्या से प्रसन्न हो कर आशुतोष भगवान् शिव ने उन्हें प्रत्यक्ष दर्शन दिये तथा वरदान माँगने को कहा। भगवान परशुराम ने अपनी माता को पुनर्जीवित करने की प्रार्थना की। भगवान् शिव ने उनकी माता को जीवित कर दिया तथा एक "फरसा" भी दिया तथा कहा कि जब भी युद्ध के समय इसका प्रयोग करोगे तो विजयी होगे।

परशुरामं जी वहीं पास के वन में एक कुटिया बना कर अपनी पत्नी गायत्री के साथ रहने लगे। थोड़े दिन बाद ही परशुराम जी ने अपने फरसे से सम्पूर्ण सेना सहित राजा सहस्त्र बाहु को मार दिया। इस प्रकार उन्होनें पृथ्वी पर क्षत्रियों के दुष्कर्मो के कारण उनको मृत्यु दण्ड दिया तथा जिस स्थान पर शिवलिंग की स्थापना की थी वहाँ एक मन्दिर भी बनवा दिया। कालान्तर में मन्दिर खंडहरों में बदल गया। काफी समय बाद एक दिन लण्डौरा की रानी इधर घूमने निकली तो उसका हाथी वहाँ आकर रुक गया। महावत की बड़ी कोशिश के बाद भी हाथी वहाँ से नहीं हिला। तब रानी ने सैनिकों को वह स्थान खोदने का आदेश दिया।

खुदाई में वहाँ एक शिवलिंग प्रकट हुआ जिस पर रानी ने एक मन्दिर बनवा दिया। यहीं शिवलिंग तथा इस पर बना मन्दिर आज परशुरामेश्वर मन्दिर (पुरा महादेव) के नाम से विख्यात हैं। तथा उसी मन्दिर को अब दानदाताओं की कृपा से भव्य रुप दिया जा रहा हैं।

इसी पवित्र स्थल पर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी कृष्ण बोध आश्रम जी महाराज ने भी तपस्या की है तथा उन्हीं की अनुकम्पा से सन् १६५१ में पुरा महादेव समिति भी गठित की गई जो इस मन्दिर का संचालन करती हैं। आज जहाँ पर यह मन्दिर है वह एक छोटा सा गाँव है जिसका नाम पुरा है, यह जनपद मेरठ का एक पावन स्थल है। शिव भक्तों का श्रद्धा केन्द्र है। इसे एक प्राचीन सिद्धपीठ भी माना गया हैं। इस क्षेत्र के लिए हीं नहीं प्रत्युत्त समस्त पश्चिमी उत्तर प्रदेश में इसकी मान्यता है। लाखों शिव भक्त पैदल ही हरिद्वार से पतित पावनी माँ गंगा का पवित्र जल लाकर परशुरामेश्वर महादेव का अभिषेक करते हैं तथा ऐसी मान्यता है कि आशुतोष भगवान् भोले शंकर भी प्रसन्न हो कर अपने भक्तों की सभी मनोकामनाएँ पूर्ण कर देते हैं।

"बम बम भोले, हर हर महादेव"

तीर्थ मोक्ष के द्वार हैं

"तरति अनेन इति तीर्थम्" अर्थात् जिसके द्वारा मनुष्य इस अपार संसार से तर जाये उसी की तीर्थ संज्ञा हमारें धर्माचार्यो ने दी हैं। वे तीर्थ अलौकिक हैं, स्वर्ग के सोपन हैं और भगवान की लीलाओं के स्मारक होने से भगवन्मय हैं। तीर्थो की अनन्त महिमा हैं, वे अपनी स्वाभाविक शक्ति से ही तीर्थ यात्री के पाप नाश करके मन वांछित फल प्रदान करते हैं और मोक्ष तक की प्राप्ति करा देते हैं।

तीर्थ किसे कहते हैं :- सामान्यतः उस नदी, सरोवर, मन्दिर अथवा भूमि को तीर्थ कहते हैं, जिसमें एक दिव्य शक्ति होती हैं और उस शक्ति के सम्पर्क में आने से अर्थात् स्नान एवं दर्शन करने से मनुष्य के पाप अज्ञात रुप से नष्ट हो जाते हैं एवं मन को शान्ति मिल जाती हैं। धर्मग्रन्थों में तीर्थों की महिमा के प्रसंग में तीर्थ स्नान से दैविक, दैहिक एवं भौतिक तापों की निवृत्ति बताई गई है।

तीर्थ तीन प्रकार के है :-

१ नित्य तीर्थ :- सृष्टि के प्रारम्भ से ही जिन पवित्र स्थलों अथवा नदियों में दिव्य पावनकारिणी शक्ति है वे नित्य तीर्थ हैं। यथा कैलास, मानसरोवर, काशी, गंगा, यमुना आदि।

२ भगवदीय तीर्थ :- ये वे तीर्थ हैं जहाँ भगवान् का अवतार हुआ हैं, भगवान ने कोई लीला की है अथवा अपने भक्त को दर्शन देकर उसको वरदान दिया है या उसका उद्धार किया हैं। यथा अयोध्या, मथुरा, वृन्दावन, हरिद्वार, काशी, रामेश्वरम् आदि।

संत तीर्थ :- जो जीव मुक्त देहातीत, परम भगवत अथवा भगवन् प्रेम में तन्मय संत हैं, उन संतो के चरण जहाँ जहाँ पड़ते है वह भूमि तीर्थ बन जाती हैं। इसे सिद्ध भूमि भी कहा जाता हैं। सन्त की जन्मभूमि, साधनभूमि, उसकी निर्वाणभूमि एवं समाधि तो विशेष रुप से पवित्र होती हैं। यथा–शुकताल नैमिषारण्य, श्री नाथद्वारा, ननकाना

साहब, परशुरामेश्वर महादेव मन्दिर आदि।

धर्मग्रन्थों में तीर्थ महिमा :- हिन्दू धर्मग्रन्थों में तीर्थों के नाम, रुप लक्षक्षों और महत्व का विशद वर्णन हैं। वेद, पुराण, महाभारत, रामायण आदि सभी ग्रन्थ तीर्थमहिमा से परिपूर्ण हैं।

ऋग्वेद :-

यत्र गंगा च यमुना च यत्र प्राची सरस्वती।
यत्र सोमेश्वरो देवस्तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परिस्त्रव।
(ऋक्–परिशिष्ट)

हे सोम ! तुम इन्द्र के पानार्थ रस रुप में निकलो अर्थात् प्रवेश करो जिस तीर्थ में गंगा यमुना तथा पूर्वाभिमुख बहने वाली सरस्वती हैं और जिस तीर्थ में सोमेश्वर महादेव है वहाँ आकर मुझे अमृत प्रदान करो।

अर्थवेद कहता है - मनुष्य तीर्थों के सहारे कठिन से कठिन विपत्तियों को पार कर जाता हैं।

"तीर्थस्तरन्ति प्रवत्तो महीरिति यज्ञकृतः सुकृतोयेनयन्ति"
(अथर्व० १८/४/७)

स्कन्दपुराण :-

काशी काञ्ची च मायाख्या त्वयोध्या द्वारक्त्यापि।
मथुरावन्तिका चैता सप्त पुर्याऽत्र मोक्षदाः। (स्क० काशी खण्ड)

काशी, काञ्ची, माया (लक्ष्मण झूला से कनखल तक) अयोध्या, द्वारका, मथुरा और अवन्ति (उज्जैन) ये सात पुरियाँ मोक्ष देने वाली हैं।

महाभारत :-

ऋषीणां परमं गृहयमिदं भरतसत्तम।
तीर्थाभिगमनं पुण्यं यज्ञैरपि विशिष्यति (महा० काशीखण्ड)

ऋषियों का यह परम गुह्य मत है कि दरिद्र व्यक्ति भी तीर्थ यात्रा से जो फल पाता है वह अग्निष्टोम आदि यज्ञों द्वारा भी दूसरों को सुलभ नहीं हैं।

तीर्थवास में पालनीय नियम :-

१ कभी किसी को कटुवचन न कहें।

२ परस्त्री, परद्रव्य तथा पर–उपकार का सर्वथा त्याग करें।
३ दूसरे की निन्दा न करें।
४ भूल कर भी किसी से ईष्या न करें।
५ सत्य एवं मृदु भाषा प्रयोग करें।
६ ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें।
७ इन्द्रियों पर संयम रखे।
८ क्रोध का सर्वथा त्याग कर दें।
९ यथा शक्ति दान दें। दान ग्रहण न करें।
१० पुण्य क्षेत्र को अस्वच्छ न बनायें।
११ वहाँ के नियमों का पूरी तरह पालन करे।
१२ किसी प्रकार का अंहकार न करें।
१३ सभी यात्रियों से अच्छा व्यवहार करें।
१४ प्रसाद आदि में सत्कार बुद्धिरखे।
१५ तीर्थ वास में पाप भूल कर भी नहीं करें।

अन्य क्षैत्रे कृतं पापं पुण्यक्षैत्रे विनश्यति।
पुण्य क्षैत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति।।

स्कन्द पुराण में कहा गया हैं दूसरे स्थान पर किया गया पाप तीर्थ स्थान पर जाने पर नष्ट हो जाता है परन्तु तीर्थ स्थान में किया गया पाप तो हढ़ हो जाता हैं।

तीर्थ सेवन का परम फल :- तीर्थ यात्रा या तीर्थ सेवन का वास्तविक परम फल हैं "भगवत्प्राप्ति" या "भगवत्प्रेम की प्राप्ति" है। जो तीर्थ यात्री श्रद्धा एवं विश्वास के साथ तीर्थ के नियमों का पालन करते हैं उन्हें निश्चय ही परम फल प्राप्त होता है। उनके लिये मोक्ष का मार्ग प्रशस्त हो जाता हैं तीर्थो में अध्यात्म सम्बन्धी परमाणु स्वाभाविक की व्याप्त रहते है अतः तीर्थ यात्रा से धर्म प्रेमियों का उद्धार हो जाता हैं।

तीर्थ यात्रा के अन्य लाभ :- लौकिक दृष्टि से भी तीर्थ यात्रा के अनेक लाभ है।

१ स्थान स्थान की वेशभूषा, रहन सहन, आचार विचार, रंग रुप, भाषा, वनस्पति एवं पैदावार का ज्ञान होता है।

२ उस स्थान के धार्मिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, कलात्मक, सामाजिक, आर्थिक आदि सभी का ज्ञान होता हैं।

३ जलवायु का परिवर्तन, नाना प्रकार के दृश्य, झरने, पर्वत, कन्दराएं, कीट, पशु पक्षी आदि यात्री के मन पर अमिट प्रभाव डालते हैं।

४ तीर्थयात्रा राष्ट्रीय भावना का भी उदय, पोषण तथा वृद्धि करती हैं।

५ तीर्थ यात्रा से लौटा हुआ व्यक्ति अनुभवी, व्यापक दृष्टि सम्पन्न एवं कार्य कुशल हो जाता हैं।

६ हिमालय की पर्वत श्रेणियां भूगर्भ शास्त्र का भी ज्ञान कराती हैं।

७ विभिन्न देवालयों के दृश्यावलोकन से वास्तुकला का भी ज्ञान हो जाता है।

८ परमात्मा के प्रति सच्ची भक्ति, सद्भावना, सदविचार, सत्कर्म परोपकार तथा दान पुण्य आदि के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होती हैं।

६ तीर्थ यात्रा हमारी राष्ट्रीयता, भारतीय व्यापक अखण्डता, भारतीय सांस्कृतिक अखण्डता, सामाजिकता एवं आध्यात्मिकता को भी आक्षुण्ण बनाए रखती हैं।

१० अध्यात्म प्रधान तीर्थो की ही विशेषता है कि यात्री तीर्थवास अथवा तीर्थयात्रा से धार्मिक भावना लेकर आता है और उसके दर्शन एवं प्रवचन से दूसरे गृहस्थ भी लाभन्वित होते हैं।

तीर्थो की वर्तमान स्थिति :-

जिस प्रकार भगवत्परायण महान सन्त महात्माओं ने अपनी तपस्या, त्याग एवं पुण्य बल से तीर्थो को पवित्रतम बनाया था। उनकी कीर्ति को अक्षुण्ण रखा था। उनके प्रभाव में विस्तार किया था। तीर्थो की ओर श्रद्धालुओं की रुचि उत्पन्न की थी। ठीक उसके विपरीत आज पापाचारी दाम्भिक लोगों ने तीर्थो के स्वरुप को नष्ट भ्रष्ट करना आरम्भ कर दिया है।

१ आज तीर्थों में अस्वच्छता का बोलबाला है।

२ बहुत से देवालयों की देखभाल करने वाला कोई नहीं है। वे खंडहर में बदलते जा रहे हैं।

३ पवित्र स्थलों में धूम्रपान एवं मदिरा पान को रोकने वाला कोई नहीं हैं।

४ नदियों में उद्योगों की गन्दगी जाने से प्रदूषण चरम सीमा पर पहुँच गया हैं।

५ श्रद्धालुयों की भीड़ को नियन्त्रित करने वाले दूर दूर तक नहीं दिखाई देते।

६ भक्तों को देवालयों में पहुचनें के बाद भी अपने आराध्य देव के दर्शन नहीं हो पाते।

७ तीर्थो में अनाचार अपनी जड़े जमा रहा है।

अतः प्रशासन एवं तीर्थसमितियों को इस ओर ध्यान देना चाहिए। बल्कि प्रत्येक तीर्थ प्रेमी को इस ओर ध्यान देकर उन पावन स्थलों की महिमा को नष्ट होने से बचाना चाहिये।

हमारे परम पावन तीर्थ स्वच्छ, सुव्यवस्थित, शान्ति, आस्था एवं सदाचार के प्रतीक होने चाहिये। वहाँ जाकर यात्री को जो आधि दैविक रुप से सात्विक पापहारक प्रभाव प्राप्त होता है, वह तो सदा होता ही रहे इसके साथ उसे तीर्थो में स्वास्थ्यप्रद वायुमण्डल, शान्तिपूर्ण वातावरण तथा सदाचार एवं श्रद्धा को प्रेरित करने वाला सत्संग भी प्राप्त होना चाहिए। इसके लिये तीर्थो एवं देवालयों में सदाचारी विद्वानों द्वारा कथा तथा सत्संग का भी नियमित आयोजन होना चाहिए।

अगर तीर्थो में शान्तमय, स्वच्छ एवं पवित्र वातावरण बना रहा तो वे निश्चय ही हमारा उद्धार करते रहेगें।

ॐ नमः शिवाय्

धर्मयात्रा महासंघ-परिचय

देश भर में श्रावण मास तथा महाशिवरात्रि के समय लाखों–लाखों काँवरिये गंगाजी से कावरों के माध्यम से जल ले जाकर अपने आराध्य देव भगवान शिव को समर्पित करते हैं। मार्ग में कठिनाइयाँ भी आती हैं और असुविधायें भी होती हैं। इन्हें ठीक कराना किसी एक या दो व्यक्तियों के लिए सम्भव नहीं हैं। इन्हें ठीक कराने के लिए कांवरियों का एकजुट होना अत्यन्त आवश्यक है, यह ध्यान में रखकर **"धर्मयात्रा कांवर महासंघ"** का गठन किया गया किन्तु बाद में देशभर में निकलने वाली अन्य अनेक यात्राओं को भी इस संस्था के कार्यक्षेत्र में लाने के लिए निम्न उद्देश्यों को पूर्ण करने की दृष्टि से इसे धर्मयात्रा महासंघ का नाम दिया गया:–

उद्देश्य :-

- तीर्थ पूर्वजों की धरोहर, भारतीय संस्कृति के प्रतीक और मोक्षद्वार हैं। उन्हें सहजकर, संभालकर रखना विकास एंव पुनरुद्धार कराना तथा उनकी पवित्रता को बनाये रखना।
- लुप्त प्रायः तीर्थो की खोज कर उनका इतिहास एकत्र करना और भारतीय जनमानस पर उनकी छवि पुनः अंकित करना तथा तत्संबधी साहित्य सृजन करना।
- भारत से बाहर के तीर्थो, जैसे – पंजासाहिब, कटासराज, ननकाना साहिब, हिंगलाज आदि तीर्थो की सब प्रकार से चिंता करना।
- पवित्र नदियों, सरोवरों को प्रदूषण मुक्त करने के लिए सरकार से व्यवस्था करवाना तथा पर्यावरण रक्षा हेतु वृक्ष लगवाना।
- केन्द्र एवं प्रांतीय सरकारों से तथा स्थानीय प्रशासन से भारत तथा भारत के बाहर जाने वाले तीर्थ यात्रियों को हर संभव सहायता एवं सुविधायें प्राप्त कराना।
- सरकार से अन्य धर्मावलाम्बियों के समान हिंदू तीर्थ यात्रियों को भी समान सहायता एवं सुविधायें प्राप्त करवाना।

- केन्द्र तथा प्रांतो की सरकारों द्वारा स्वतंत्र तीर्थाटन मंत्रालय का गठन हो, इसक लिए प्रयास करना।
- भारत की तीर्थाटन, तीर्थदर्शन, तीर्थपूजन की प्राचीन परम्परा को पुष्ट एवं विकसित करने के लिए कार्य करना।
- तीर्थ व्यक्तिवाद, जातिवाद, अलगाववाद को समूल नष्ट करते हैं। इस तथ्य–सत्य को जन मानस में बैठाना।
- विभिन्न तीर्थ यात्रा मार्गो में स्थान–स्थान पर लगने वाले सेवा केन्द्रों एवं कार्यो में लगे व्यक्तियों और संस्थाओं से संपर्क एवं समन्वय स्थापित करना।
- देश भर में निकलने वाली विभिन्न समुदायों की धर्म यात्राओं के संबध में आवश्यक जानकारी देने वाले साहित्य का निर्माण करना।
- यात्रा मार्ग में तीर्थ यात्रियों के लिए चिकित्सा हेतु औषधालय, चलचिकित्सालयं एवं चिकित्सकों की व्यवस्था करना और कराना।
- उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करना।

उपलब्धियां :-

धर्मयात्रा महासंघ ने अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अनेक कार्यक्रम किए। जिनकी प्रमुख उपलब्धियां इस प्रकार रहीं :–

- दिल्ली सरकार को सुझाव देकर कांवरिया समिति का गठन ही नहीं करवाया वरन् उसके लिए पृथक से बजट की व्यवस्था कराई।
- उत्तर प्रदेश से दिल्ली तक कांवर यात्रियों के लिए विशेष व्यवस्था की गई।
- १९९६ से गंगावतरण महोत्सव द्वारा माँ गंगा एवं समस्त पवित्र नदियों को प्रदूषण मुक्त करने का अभियान आरम्भ किया गया। जिसमें गोमुख से गंगासागर तम 21 स्थानों पर यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।
- सभी राज्यों में तीर्थ यात्रियों को राजकीय सुविधायें दिलाने के

प्रयास किए गए। राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र में सफलता मिली है।

- कैलास–मानसरोवर यात्रा पर जाने वाले विभिन्न जत्थों का अभिनन्दन दिल्ली सरकार एवं संस्था द्वारा किया गया। एक जत्थे को राष्ट्रीय स्वर्यसेवक संघ के सरसंघचालक मा० राजेन्द्र सिंह "रज्जू भैया" जी द्वारा भाव–भीनी विदाई दी गई।
- कैलास–मानसरोवर यात्रा 1996 के यात्रियों का माननीय अटलबिहारी वाजपेयी द्वारा (अपने प्रधानमंत्री काल में) आर्थिक अनुदान दिलाया गया।
- दिल्ली सरकार द्वारा गठित तीर्थ यात्रा विकास समिति कैलास मानसरोवर यात्रियों को धर्मयात्रा महासंघ के सहयोग से दिल्ली प्रवास के दौरान सहायता की जाएगी, ऐसा सैद्धान्तिक रुप में स्वीकार किया गया।
- अमरनाथ यात्रा पर जाने वाले यात्रियों के लिए पहलगांव से पवित्र गुफा तक के मार्ग में विभिन्न संस्थाओं के सहयोग से अनेक राहत शिविर लगवाएं तथा उन समाजसेवी संस्थाओं को राष्ट्रीय नेताओं के हस्तक्षेप से राजकीय सहयोग प्राप्त कराया।

भावी योजनाएं :-

हरिद्वार में नीलधारा पर कांवरियों को जल भरने के लिए विशेष व्यवस्था करवाना।

गोमुख से गंगा सागर तक के विभिन्न स्थानों पर गंगा अवतरण सामारोह का आयोजन और गंगा को प्रदूषण मुक्त करने के लिये कार्य करना।

- "भारत की आत्मा तीर्थो में वास करती है – तीर्थो का विकास भारत का विकास "शीर्षक विचार से स्मारिका का प्रकाशन करना"।
- भारत सरकार द्वारा तथा प्रान्तीय सरकारों में तीर्थाटन मंत्रालय की स्थापना की मांग।
- भारत सरकार को इसके लिए तैयार करना कि वह अन्य

धर्मावलम्बियों के समान तथा संविधान के अनुसार विदेशों में स्थित हिन्दू–तीर्थ स्थानों पर जाने वाले यात्रियों के लिए भी सुविधायें देने की नीति तथा कार्यक्रम बनाए।

- भारत तथा विदेशों के तीर्थ स्थानों के इतिहास का संकलन, प्रकाशन एवं शोधकार्य आदि लिए एक केन्द्र बनाना, दिल्ली में यात्रियों के लिए सूचना केन्द्र की स्थापना करना जहाँ वे विश्राम तथा साहित्य भी प्राप्त कर सकें।
- भारत सरकार के डाक–तार मंत्रालय से भारत के प्रमुख तीर्थ स्थानों के डाक–टिकट निकलवाना।
- प्रमुख तीर्थ स्थानों के वीडियो टेप तैयार करना। चित्रों व अन्य प्रचार सामग्री तैयार करना।
- तीर्थ स्थानों के प्रति नयी पीढ़ी की रुचि के विकास के लिए तीर्थस्थान ज्ञानप्रतियोगिता आरम्भ करना।
- कक्षा दस तक के छात्रों के पाठ्यक्रम में भारत के प्रमुख तीर्थ स्थानों के बारे में जानकारी देने वाला कम से कम एक लेख अवश्य ही रखवाना।
- तीर्थ स्थानों के लिए स्टीकर, चित्र आदि का वितरण।
- बच्चों के लिए तीर्थ–स्थानों के इतिहास एवं महत्व की जानकारी देने वाली बाल–पुस्तकों के प्रकाशन की प्ररेणा एवं व्यवस्था के लिए प्रयत्न करना।
- देश के कुछ चुने हुए तीर्थ–स्थानों पर वर्ष में एक बार प्रमुख धार्मिक कार्यक्रम के समय एक विराट सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन करना और इस अवसर पर हिन्दू धर्म के पवित्र तीर्थ स्थानों की जानकारी देने वाली प्रदर्शनी का भी अन्य कार्यक्रमों से साथ आयोजन करना।

"जगन्नाथ यात्रा के समान दिल्ली में अन्य प्रान्तों के राष्ट्रीय महत्व के कुछ प्रमुख धार्मिक कार्यक्रमों को योजनाबद्ध तरीके से आरम्भ करना, जैसे महाराष्ट्र का गणेशउत्सव"।

भारत के प्रमुख तीर्थ–स्थलों पर कार्यालयों की स्थापना, धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों की योजना एवं यात्रियों की सुख–सुविधा के लिए प्रयत्न करना।

धर्मयात्रा महासंघ के पदाधिकारी

सरंक्षक :-

1. **श्री अटल बिहारी वाजपेयी** (भूतपूर्व प्रधानमंत्री, भारत सरकार)
2. **श्री अशोक सिंहल** (कार्यकारी अध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद्)
3. **श्री जगमोहन** (भूतपूर्व राज्यपाल एवं सांसद)

न्यासी :

1. श्री मांगे राम गर्ग
2. श्री औंकार भावे
3. श्री सुनील कुमार शर्मा
4. श्री गंगाशरण मददगार
5. श्री ओमप्रकाश सिंघल
6. श्री हितेन्द्र संगल
7. श्री साहिब सिंह वर्मा
8. श्रीमती मृदुला सिन्हा
9. श्री राजेन्द्र मित्तल
10. श्री रोशन लाल
11. श्री कालका दास

केन्द्रीय पदाधिकारी :-

राष्ट्रीय अध्यक्ष	:	श्री मांगे राम गर्ग	दिल्ली
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	:	श्री चामृति शिवराव	वारंगल
	:	श्री कुवँर नरेन्द्र प्रताप सिंह	गोरखपुर
	:	श्री राम लुभाया	सागर
राष्ट्रीय संयोजक	:	श्री सुनील कुमार शर्मा	हरिद्वार
राष्ट्रीय महामंत्री	:	श्री गंगाशरण मददगार	हरिद्वार
राष्ट्रीय प्रचारमंत्री	:	श्री हितेन्द्र संगल	दिल्ली
राष्ट्रीय मंत्री	:	श्री हनुमान प्रसाद	भिवानी
	:	श्री गौरी प्रसाद रथ	भुवनेश्वर
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	:	श्री सीता राम जिन्दल	दिल्ली

भारत की आत्मा तीर्थों में वास करती है
तीर्थों का विकास भारत का विकास।

सौजन्य से :

तिरपाल उद्योग

हर प्रकार की मिल्स व पावरलूम ग्रे केनवास, वाटर प्रूफ केनवास, जीन सीटिंग (डेढ़ सूती व दो सूती) फिल्टर क्लाथ कार कवर, स्कूटर कवर व ट्रक तिरपाल के निर्माता एवं विक्रेता

२५०-२५१, आजाद मार्केट, दिल्ली-११०००६

सहयोगी संस्थान :

मै॰ केदारनाथ अमरनाथ

२५०-२५१, आजाद मार्केट, दिल्ली-११०००६

☎ दुकान : ७३३६७१, ७७७६८२५, ७५२०२५२, ३५५७७५१, ३५४३६७०

फैक्स : ३५४३६७०